डॉ शुभदा पाण्डेय

स्वर्णमृगी सपनों से पारवी

स्वर्णमृगी सपनों से पारखी

डॉ. शुभदा पाण्डेय

सर्व भाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली
www.sarvbhashatrust.com

स्वर्णमृगी सपनों से पाखी

डॉ. शुभदा पाण्डेय

ISBN : 978-93-93605-98-6

मूल्य : 450.00/-

प्रथम संस्करण : 2022

© डॉ. शुभदा पाण्डेय

प्रकाशक

सर्व भाषा ट्रस्ट

J-49, Street No. 38, Rajapuri, Main Road,

Uttam Nagar, New Delhi-110059

E-mail : sbtpublication@gmail.com

Website : www.sarvbhashatrust.com

Mob. : +91 81786 95606, 9205461387

मुद्रक : आर. के. ऑफसेट प्रोसेस, दिल्ली

SWARGMRIGHI SAPNON SE PAKHI

by Dr. Shubhada Pandey

Mewar University, NH-79, Gangrar,

Chittorgarh, Rajasthan, India 312901

Ph. No : +91 9316348893, +91 9133103482

Email : shubhadapandey8@gmail.com

Price : Rs. 450.00

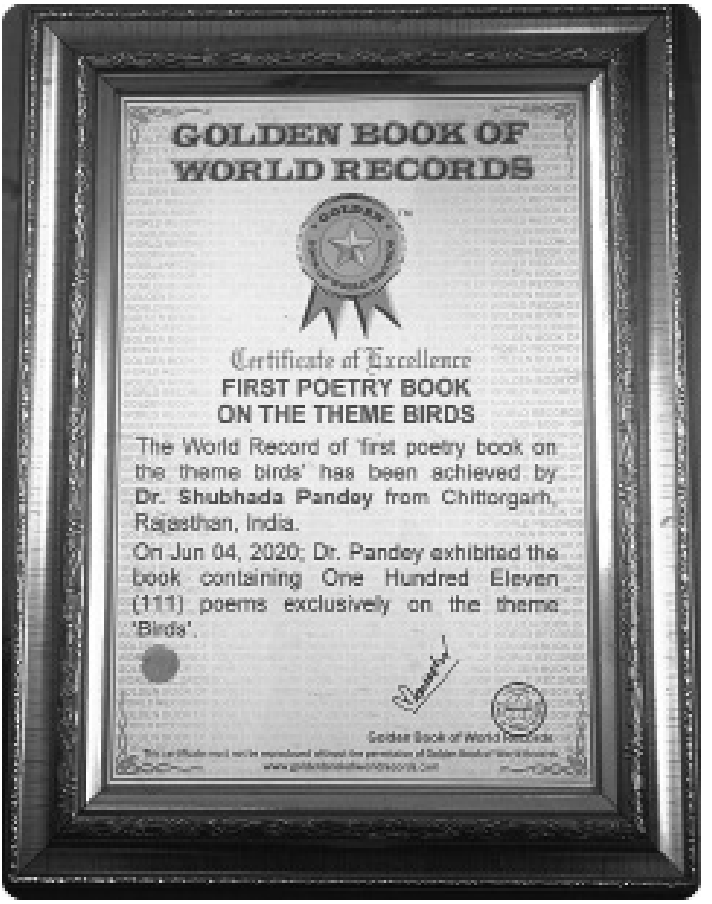
GOLDEN BOOK OF WORLD RECORDS

Certificate of Excellence

FIRST POETRY BOOK ON THE THEME BIRDS

The World Record of 'first poetry book on the theme birds' has been achieved by **Dr. Shubhada Pandey** from Chittorgarh, Rajasthan, India.

On Jun 04, 2020; Dr. Pandey exhibited the book containing One Hundred Eleven (111) poems exclusively on the theme 'Birds'.

Golden Book of World Records

(गोल्डेन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड का प्रमाण पत्र)

This is the collection of my poetry on theme birds found not only in India butAlso foundAllAcross the world. Due to my patriotic love for nature for climateAnd environment of my beloved country I have selected most of the birds from my country India. I love the singingAnd movements of birds. I enjoy watching birds in their natural habitat.



तथागत को...

प्रोफेसर राजीव मोहन पन्त
Prof. Rajive Mohan Pant

कुलपति
Vice-Chancellor

असम विश्वविद्यालय
(एक केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
सिलचर-788011, असम, भारत
ASSAM UNIVERSITY
(A Central University)
Silchar-788011, Assam, India

क्षितिज के पार के कलमकार का अभिनंदन

देश की वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. शुभदा पांडेय काव्य-जगत में एक चिरपरिचित लोकप्रिय नाम हैं। उनकी कलम की निर्बाधता उनके विश्वास की गौरवमयी गाथा है। उनकी साहित्य-साधना, क्रियाशीलता एवं मधुर स्पंदनों की सृष्टि एक कलेवर रही क्रियाशीलता को अनुप्रेरित करती है।

सद्यः उनकी पक्षियों पर आधारित रचनाएँ देखने का सुअवसर मिला, आश्चर्यजनक सुखानुभूति होना स्वाभाविक है। उनकी वृहद चिंतन शैली, अद्भुत शब्द-संयोजन, रोचक प्रस्तुति को पढ़ते-पढ़ते व्यक्ति कब एक नयी दुनिया में प्रवेश कर जाता है। पता ही नहीं चलता... बस एक खुला आकाश है... उड़ता हुआ। ये सोच पक्षियों को जिस सूक्ष्म मानवीय दृष्टिकोण से परिचित कराता है, वह सदा सराहा जाता रहेगा।

पुराण, उपनिषद, रामायण, गीता, लोककथाओं, आधुनिक संदर्भों, पात्रों व चरित्रों इन सबके समन्वय से ही, इस पक्षी-लोक की सैर करना न केवल सुखद अनुभूति है...बल्कि अलभ्य उपलब्धि भी। आज के भौतिकवादी युग में प्रकृति के इन आयामों पर ममतामयी दृष्टिपात करना विषाद से उन्मुक्तता का मार्ग प्रशस्त करता है-

एक-एक कविता गागर में सागर है,
चातक की आवाज सुरीली।
जैसे कोई रात लजीली।

प्रकृति इनका प्रमुख प्रतिपाद्य है, उसी के अनुरूप भाषा और शैली भी निरावरण है। उनका कलमकार अपने शिक्षक के दायित्वों का भी बखूबी निर्वहन करता है, समय की मांगों को पूरी करती उनकी कविताएँ, समय से परे जीना भी जानती हैं, यही मौलिकता ही श्रेष्ठता है।

उनके यशस्वी जीवन के अन्य दुर्लभ उपलब्धियों की शुभकामनाएँ...

सस्नेह!

30-08-2022

प्रो. राजीव मोहन पंत

Phone: +91 3842 270801, 270273(Office) Fax: +91 3842 270802(Office), Cell: +91 94350 73676, Email: vc@aus.ac.in

कवि-कलम से

आज का दिन मेरे जीवन की खास तारीखों में लिखा जाएगा... इसलिए नहीं कि आज कोई विशेष बात हुई है - किंतु इसलिए कि, आज जिस बात की नींव पड़ गई ... / कोई विशेष उपलब्धि की ओर शुभ-संकेत अवश्य है। लगभग 20 फरवरी के आसपास का दिन रहा होगा, प्रोफेसर चित्रलेखा जी ने - मुझे निर्देश दिया कि- आप पक्षियों पर रिकार्ड बनाने योग्य कविताएँ लिखें। काम कठिन तो था ही... सरल नहीं था। पर आदेश को फौजी की तरह मानने की आदत कारगर हुई, वो यूँ कि - भूत की तरह सवार हो गई। जाड़े के दिनों में, दिन छोटे, और बड़े लक्ष्य को लेकर जीना... नयी अनुभूति थी।

मेरे अंदर का जुझारूपन जाग गया और यकीन मानिए - मेरे रातों की नींद गायब थी। मैम ने स्वयं कई बार वाट्सप पर देख सोने का संकेत दिया। मेरे दूर-दराज के हितैषियों ने भी टोका।

लेकिन मैं सबका सम्मान करते हुए भी एक दिन के लिए भी विचलित नहीं हुई, और अपने ध्येय-वाक्य-

राम काज कीन्हें बिनु।

मोहि कहाँ विश्राम।।

के अनुरूप काम करती रही।

इस बीच नियमावली के अनुसार मुझे 100 पक्षियों पर काम करना निश्चित हुआ, और गोल्डेन बुक ऑफ रिकार्ड वालों ने इसे पक्षियों पर कविताओं को लेकर पहला मौलिक काम माना। मेरी रातों की नींद तो गयी ही थी... दिन का चैन भी गया। सोते... जागते... बैठते बस एक ही धुन रहती... और अनेक बार मैं उन्हें देखने निकल जाती। उनके चित्र खींचती... कार्यालय की खिड़की से सरोवर दिखता था... और वहाँ दिन भर उनका आना-जाना लगा रहता।

गौर से देखती... यद्यपि यह कोई एकदम नया काम नहीं है... मेरे

लिए - इसके पहले भी मेरी दो कृतियाँ आ चुकी हैं - पक्षियों पर... पर ये काम अलग, विस्तृत और पृथक है... इसमें दो राय नहीं।

मैम से मैं नियमित शाम को मिलती हूँ।

और रोज का चिड़ियानामा उनके साथ प्रस्तुत होता और उनके प्रोत्साहन भरे शब्द-ऊर्जा का संचार करते।।

मैं आगे बढ़ती।

एक वृहद-सहयोग गूगल और व्हाट्सएप की दुनिया का योगेश श्याम जी का रहा...

गजब की ऊर्जा और अद्भुत प्रतिभा के धनी हैं- योगेश!

इस समय में इतने सक्रिय और लगनशील लोगों का मिलना मुश्किल है... एक-दो दिन तो कोई भी कुछ सहयोग कर सकता है पर नित्य ही मेरे समय-बेसमय के अनुसार अपनी बौद्धिक आदान-प्रदान से लाभान्वित कराना सरल ही नहीं... दुष्कर है। 85 प्रतिशत देश जब कोरोना के भय में जी रहा है... ऐसे में-

अपने धुन का पक्का होना... स्तुतीय है।

मेरी तो योनि ही बदल गई है... कहूँ तो बुरा नहीं मानना साथियों...

इस कोरोना को लेकर वैसे ही... छूने को लेकर पाबंदियाँ और भ्रम है...

मेरी खग-योनि के अनर्थ न निकलें।

असल में-इसे पक्षीमेध कहना अधिक प्रासंगिक होगा।

मुझे कितना आकाश दिया है इन खगेशों ने, बता नहीं सकती।

यहाँ से नित्य मेरे मानस के कागभुसुंडी और गरूण जी का पदार्पण होता।

श्रीमद्भागवत का शुक अभी भी मेरे साथ है।

मित्रों! कोई भी बड़ा काम, बिना ईश्वरीय सहायता या सीधे-साधे मंशा

के बिना संभव नहीं होता है। श्री हनुमान जी ने इस प्रयोजन में कहाँ-कहाँ नहीं ले गये... कहना कठिन है।

एक दिन मैं उदास थी कि मेरे ईष्ट पक्षी-जगत में कहाँ बैठेंगे... मुझे कोई और विषय लेना चाहिए।

तभी मानस उच्चरित हुआ -

जीव-जंतु जे गगन उड़ाहीं।

जल बिलोकि तिन कर परिछाहीं।

और फिर आगे के प्रसंग सुनती ही रह गयी।

हाथ जोड़े।

पवन पर आधिपत्य जमाने वाले ये जीव...

पवनपुत्र के कृपा पात्र ही तो हैं।

अंत में मैं यही कहना चाहूँगी कि -

मुझे खुशी है - मैं देश के लिए... राष्ट्रभाषा के माध्यम से एक वैश्विक कार्य कर रही हूँ... जैसा प्रोफेसर पांडेय चाहते थे।

विषय सूची

विषय	**पृ.सं.**
ललमुनिया	15
ट्वीट	17
दहियर	19
सिकंदर (पहाड़ी तोता)	21
पेंगुइन	23
सतभैया	25
शिकरा	27
अबाबील	29
बया	31
टिटिहरी	32
सारस	34
चमरघेंघ	35
बत्तख	38
पनडुब्बी	39
कठफोड़वा	41
चकोर	42
फुदकी	44
लवा	46
नीलकंठ	48
कलँगी	49
तोता	51
बुलबुल	53
कोयल	54
हंस	55
गौरैया	56
थरथरकंपा	57
नीलकंठी	58
चील	60

चातक 63
इमु 65
मछलीमार 67
मोरनी 69
काला कौआ 71
देशी कौआ 73
धनचिड़ी 76
अगिया 78
मुर्गा 80
सफेद बगुला 82
देशी मैना 83
कोतवाल 85
मछीरंगा 87
श्यामा 89
क्रौंच 91
घाटो 92
फाख्ता 93
घोघर 94
मघा 95
गंगचली 97
मोर 98
कूँ-कूँ कंकल 99
राबिन 100
गिद्ध 102
खंजन 104
मुर्गी 106
उल्लू 107
जांघिल 109
सारस 111
गरूड़ 112
लाल सारस 113

पपीहा	115
तीतर	116
हरा तीतर	118
कीवी	120
शुतुरमुर्ग	122
नीलांजना	125
बटेर	127
फूलचूसी	129
फ्लामिंगो	131
बत्तख मादा	134
पीली बुलबुल	135
हरा कबूतर	139
लाल कबूतर	141
चितकबरी बत्तख	145
स्वर्ण-मुख वाली मैना	147
रोड रनर	148
चितकबरा कौआ	150
पीले बिल वाली कोयल	151
मुखुंड़	153
मैंग्रोव कोयल	155
नाईजीरिया के ताज वाले बगुला	156
साइबेरियन गुल	157
जाजुराना	159
बौना किंगफिशर	160
कोकाबुर्रा	162
सोना तीतर	163
सुनहरी तीतर	165
नीलम तीतर	168
नीलपंख तोता	170
अपापने	171
आग - पूँछ	172

नवरंग	173
दूधराज	174
पीला तोता	176
बत्तख का बच्चा	178
सतरंगी तोता	180
इंद्रधनुषी तोता	181
नीला - पीला तोता	184
नवरंग फाख्ता	187
गैल्डियन फिंच	188
लव बर्ड	189
तिपाखी - तोता	192
पूर्बिया नील पक्षी	194
काली टोपीवली चिकाड़ी	196
यूरोपियन सुनहरी फिच	199
अमेरिकन गोल्ड फींच	201
अंतिलोफिया बोकेरमणी	203
चाँदी तीतर	205
विक्टोरिया मुकुटधारी कबूतर	207
प्रवासी मुर्गाबी	210
निकोबारी कबूतर	212

ललमुनिया

जब हम बहुत-बहुत छोटे थे।
किंतु चतुर-चतुर होते थे

अम्मा ने इक खेल था लाया
बनारस का तोहफा पाया।

लकड़ी के मशहूर खिलौने।
खेलें मिल कर छौने - मौने

चिड़ियों का बक्सा था सुंदर।
तरह-तरह की चिड़िया अंदर



पर जब भी मैं खोलूँ डिब्बा
सब मिल खेले रजनी, नंदा।

मैं ले भगती लालमुनिया।
मेरे पीछे दौड़े चुनिया ।

लाल पंख पर पीली चमकी।
वाह! खूबसूरत थी... फबती ।

मानो अभी बोल ही देगी
मेरा बस्ता भी ढो देगी ।

आँखें जैसे करती बातें
बच्चों की वे स्वप्निल रातें

बाकी चिड़िया तितरी-बिखरी
ये सूटकेस और थी गठरी

भइया मेरा बड़ा रोबीला
आँख दिखाए, फिर यह बोला

बंद करो यह खेल - तमाशा
लिखना - पढ़ना नहीं सुहाता ?

अम्मा से मैं बोलूँ जा कर
नहीं - नहीं पढ़ती हूँ आकर

पर जब मैं पढ़ने को होती
भैया लाता लूडो - गोटी।

***

ट्वीट

ट्वीट् करो तुम कुछ-कुछ बोलो
मुझको मत कुछ कम तुम तोलो

मैं हूँ राजनीति की ज्ञाता
समझ सकूँ मैं सबकी भाषा

इसीलिए मैं ट्वीट कहाई
ट्वीट से पहले चिड़िया आई

जब हो राष्ट्र - प्रेम की बातें
बढ़ जाती मेरी अवकातें



सुषमा जी के ट्वीट मनोहर
वाणी, ज्ञान अति ही सुंदर

कितना उसमें ज्ञान भरा था
संस्कृति औ विज्ञान सजा था

संसद में जब खड़ी थी होती
गुम होती थी, सिट्टी - पिट्टी

एक - एक जवाब थीं देती
बड़ों-बड़ों की खबर थीं लेती

वाणी - मर्यादा, अनुशासन।
सम्मोहन का दें संभाषण।

भारतीयता - मंत्र थीं जपती
चाहे किसी देश में रहती

वेदमयी आभा थी उनकी।
पक्की थीं वो अपने धुन की

उनको मैंने गुरू बनाया
इसीलिए चचहाट कहाया

❊ ❊ ❊

दहियर

दहियर दिखी हजरिया बाग
बोले पंचम सुर के राग

श्रीवद् नाम संस्कृत वाणी
श्वेत - साँवली जन - कल्याणी

जहाँ-तहाँ दिख जाती हरदम
पूँछ उठाना इसका प्रचलन

उड़े, फुदकती चारा खोजे
कभी नहीं पहनी ये मोजे



एक दिन जाने क्या मन आया
'हाई लाईट' क्यों नहीं बनाया.?

यही सोच कर भरी उड़ान
गई पार्लल की दुकान

कही बना दो रंग कर तोता
मुझको काले रंग से धोखा

कोई कौआ कहता यारों
तोता जैसा मुझे सँवारो

तरह-तरह के रंग धरे थे
लोग बाल को पेंट करे थे

उसने हरा रंग लिया प्यारा
और चोंच को लाल दुलारा

जैसे दहियर बना सजीला
छैला बन कर बना छबीला

चिड़ियों का था मेला आया
चुटकी लेकर उसे उड़ाया

जा बैठा अमवाँ की डाली
इतने में आया था माली

हँसी को अपनी रोक न पाया
हँसते - हँसते पेट फुलाया

शाम हुई धरवहवा आया
तोता मिला मजा है आया

लेकर पहुँचा अपने द्वार
पिंजड़े का अब है संसार

नेपाल की धोबिनी चरा
खाती मीठा औ चरपरा

बंग्ला-देश की सुंदर चितहर
राष्ट्रीय पक्षी मान्य मनोहर

गरूण देव ने तब समझाया
सबको ईश्वर ने सँवराया

कम-ज्यादा कर नहीं आँकना
अपने को मत हीन भाँपना

नकली रंग कभी मत लाओ
पंख नहीं निर्जीव बनाओ

रंग बहुत - मँहगा रंग लाया
स्वतंत्रता को कैद बनाया

***

सिकंदर (पहाड़ी तोता)

कुल्लू चाहे हो मनाली
घाटी मनहर हो नेपाली

दिन दोपहर रहूँ मैं गाता
गिरि तोता हूँ बहुत लुभाता

मेरे हरे धानी पंखों पर
लाल-गुलाबी रंग दिखे हैं

मानो धान फसल के बीचो
कुंदरू के फल लाल पके हैं



स्वस्थ और सुंदर पहाड़ी
हड्डी, रक्त नशीली नाड़ी

जंगल घाटी में लहराऊँ
मुझे न भाऐ कोई गाड़ी

सैलानी आते मनभावन
मुझे देखते ज्यों हूँ सावन

देश - विदेशी सभी संगठन
जोर दे रहे हैं पर्यटन

भुट्टा, मिर्ची, फल के कतरे
खाऊँ, डरूँ नहीं मैं खतरे

जब जाऊँ कपास खेतों में
धुन देता रूई की नस्लें

उड़ता तो बच्चे ले भागे
कुछ तितली संग उड़े फुहासे

मैं भी क्या करता तुम बोलो?
गठरी की मठरी तो खोलो

***

पेंगुइन

अमरीका साउथ अफरीका में
है मेरा जिला - निवास

उड़ता नहीं तैर सकता हूँ
रोकूँ मैं देरी तक साँस

माँसाहारी भोजन करता
बर्फों पर मैं हूँ रहता

समुद्री - तट हैं आकर्षण
गहरे पानी में गोता

हाथ मेरे हैं पंख साँवले
रुकरी का हूँ समुदायी

है विचित्र प्रकृति की महिमा
दुख करता है सुखदायी

तट पर देख मनुज मुस्कानें
खुश होता हूँ बारम्बार

सभी योनियों में सर्वोपरि
मानव पाता है अधिकार

अपनी समृद्धि सोचो से
अन्वेषण का है विस्तार

मंगल की मिट्टी को सोधे
महाजलधि नापे रफ्तार

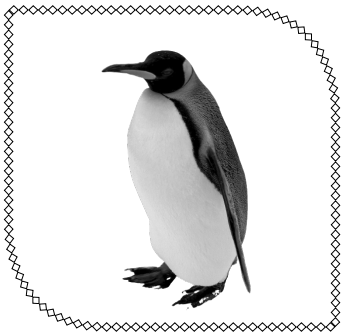

हम सब जीव स्वयं भोगी हैं
खाते - खेले जीवन पा

परहित क्या है, क्या जाने हम ?
भूख, शयन बस है स्वीकार

लिखने वालों एक कहानी
मेरे ऊपर भी लिखना

मानव बन सेवा अर्पित हो
जीवन अर्थपूर्ण करना-

* * *

सतभैया

हे सतभैया !! हे सतभैया !!
क्यों करते हो दैया-दैया ?

कहाँ गये थे, कहाँ नहाए?
अब बैठे हो पंख फुलाए।

इतना जाड़ा - कोट नहीं है ?
मोजा, टोपी, धुला कहीं है ?

अब कटकाते हो क्यों दाँत
कौड़ा जला, आग लो ताप



मैं भी क्या करता बेचारा
दे गया धोखा सूरज प्यारा

हम सब गये प्रयाग नहाने
दान, दया कर पुण्य कमाने

माघ अमावस कुछ ना बोले
सुबह-सुबह सब डैने खोले

डुबकी खूब लगाए जम कर
लेटे हनुमान जी रम कर

चिवड़ा, चावल-ले आए साधु
रहा बहुत सत्संगी जादू

सोचा सूरज भी निकलेंगे
हमें जरा राहत दे देंगे

गंग - नहाना बहुत ही भाया
पर ठिठुरन ने बहुत सताया

प्रवासी - पक्षी तब बोला
खूब समोसा लाया छोला-

***

शिकरा

मैं हूँ बाज - वंश का प्रहरी
कुछ छोटी पर बड़ी छरहरी

छिप कर मैं संधान लगाऊँ
इसीलिए संचान कहाऊँ

उपर भूरे पंख फरीले
ललछौहें नीचे चमकीले

भारत का हूँ रहने वाला
देश मेरा सबसे मतवाला



जंगल घने नहीं हैं भाते
खेत, सरेह, झाड़ी से नाते

संकट-मुक्त प्रजाति हमारी
क्या कर लेगा यहाँ शिकारी ?

चीपक भी है मुझको कहते
बड़े--बड़े हैं मुझसे डरते

ग्रह में सेनापति है मंगल
योद्धा बीच बना मैं दंगल

एक आजाद सिंह है भाई
उनसे मेरी बहुत मिताई

जब वे आकर द्वार पधारे
देते हैं जलपान हमारे

हम सब की हैं फोटो लेते
तरह-तरह हम पोज हैं देते

जीव - जंतु में है दिलचस्पी
घूमे जंगल, गाँव औ कश्ती

हम सब ने भी मिल कर पूछा
रहते कहाँ, कहो अनबूझा ?

लखनौ शिक्षा, भ्रमण - सवारी
'ब्लाग' - पक्षी आजाद हूँ न्यारी

बड़े - बड़ों का करूँ शिकार
इसीलिए शिकरा हूँ यार

तुम सब रहो सदा खुश हाल
सोच सदा से है फिलहाल

***

अबाबील

चले झुंड में जग से न्यारी
चोंच, पैर के रंग हैं कारी

नीला, श्याम पंख चमकीला
उड़ता जैसे छैल - छबीला

गौरैया से भी है छोटी
प्याली नुमा घोंसला - खोंती

मौसम की यह है संवदिया
तापमान से उड़े सुरहिया

जहाँ कहीं घोंसला बनाती
अगले वर्ष वहीं पर आती

चलती है ब्रिटेन से आगे
अफ्रीका तक उड़ती भागे।

बड़ी इमारत पर इसका घर
है आजाद, नहीं कोई डर।

कीड़े खाकर फसल बचाती
खेतिहर की है मित्र कहाती

अबाबील जब से है आती
कृषि-जगत में खुशियाँ छातीं

करे सफाया नन्हें कीड़े
उड़ती ऊँची - ऊँची चीड़े

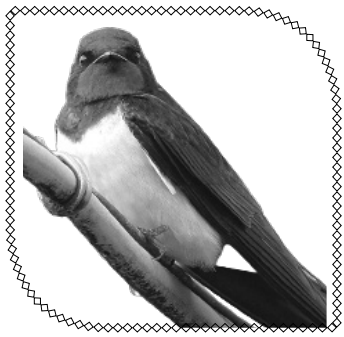

ताड़ - वृक्ष पर फ्लैट खरीदे
उस पर काढ़े नए कसीदें

ऊपर से सब दुनिया देखे
कौन कहाँ पर रोटी सेकें

कौन काट है रहा मलाई ?
किसको चैन नींद है आई ?

कौन कर रहे सीधा उल्लू ?
घूमें कौन मनाली - कूल्लू

***

बया

बया - बया ! क्यों हो खफा
तनिक कहो ना कहाँ टिया ?

जब जुगनूँ रात को चमके
बया के बच्चे तनिक ना डरते

विद्युत की है विशेष खोजी
बोझ नहीं दिल पर मनमौजी

चिड़ियों की बैठी जब संसद
'पद्मश्री' से हुआ बड़ा कद



अभियंता हो कुशल निराली
बुनों घोंसला महलों वाली

कहाँ-कहाँ से लाती तिनका
सूत, रूई, मोती औ मनका

दिन भर इसी खोज में रहती
जाकर क्यों ना खेती करती ?

आओ न बी. एड. पढ़ जाओ
ज्ञानी शिक्षक ही बन जाओ

नहीं घरों में डाला डेरा
दूर खजूरी - शाम बसेरा

नदी किनारे रहना भाए
देख तुम्हें हम खूब जुड़ाए

***

टिटिहरी

टी वी टी टुट्-टुट्, टी वी टी टुट्-टुट्
बोल रही चिड़िया, कुछ मधुर सी अस्फुट

ताल हो तलैया हो, खींच रही नैया हो।
धीरे चलो नाविक जी, बातें हैं छुट-पुट।

लम्बे से पैर मेरे, घुघँरे हैं फिसले
पाँव पे भरोसा रख... भले हुए पतले।।



सुघड़ सा रूप मेरा, मछली से यारी।
खा-पी कर उड़ जाऊँ, खेत रखवारी।

गाँव में तलाबों का बंद हुआ उगना।
क्या करे मन-पक्षी, पिंजड़े का सुगना।।

बिगड़ रहा पर्यावरण... हम पर है घातक।
दुर्लभ कितने ही हुए... पपीहा औ चातक।

जल में है जहर घुला.. प्लास्टिक बहुंरगी
हमको कभी ऐसा लगे... गए ना फिरंगी।।

जंगल कट शहर हुए, सीमेंटी साक्षर।
अब हम बसाएँ कहाँ... छोटा अपना घर।

एक तो टॉवर भी जाल है बिछाए।
दूजे चिड़ीमारी से दुनिया बचाए।।

ऋषि, मुनि, आश्रम की परंपरा है छूटी।
कौन संरक्षण दे... किस्मत है फूटी।।

आदम के जीवन का, हूँ मैं प्रमुख हिस्सा।
बचपन का दाना, वो चिड़ियों का किस्सा।

अच्छा हुआ मैं न फँसी, मानव के जाल में।
रोते हैं मित्र कई... जी के जंजाल में।

मैंने स्वागत करके सबको बुलाया।
मिलना तुम सुरही का ताल मनभाया।।

❊ ❊ ❊

सारस

सारस रहता एक सरोवर
रटता रहता शंकर - शंकर

सबको शिव की कथा सुनाता
मन ही मन वो रहा अघाता

भक्ति का वह बना सिकंदर
प्रभु का लेता नाम निरंतर

सबको तीरथ था ले जाता
दान - पुण्य भी रहा कराता



मंत्र आदि सब रटे हुए थे
कर्म-यज्ञ में कसे हुए थे

सावन में अभिषेक कराता
सभी मित्र को था बुलावाता

रामेश्वर में मन था लगता
कई मास तक वहाँ था रहता

शिव सबका कल्याण करेंगे
जगत-पिता हैं सब समझेंगे

काटे वही सकल दुख मेरे
एक-एक सब बहुत घनेरे

वह अवश्य उद्धार करेंगे
महादेव ठुकरा न सकेंगे

* * *

चमरघेंघ

राजा एक बड़ा अन्यायी
भला-बुरा कहता दुखदायी

बहुत दुखी थी प्रजा सारी
कैसे मिटे एक महामारी ?

इक दिन उसको अटपट सूझा
मंत्री को बुलवा कर - पूछा

सबके घर तोता है पलता
मुझे और कुछ लाओ भलता



मंत्री भी बहुत मुँहजोर
सोचा आज पकड़ लिया चोर

पिंजरे में इक पक्षी लाया
उसको चमरघेंघ बतलाया

बोला - यह भी सब बोलेगा
राज शत्रु का भी खोलेगा

राजा बहुत खुशी से बोला
अच्छा मिला, मुझे अब चेला

चमरघेंघ भी बहुत घाघ था
उसके भीतर बहुत आग था

जब राजा कुछ खाना लाता
रह - रह काट वह जाता

आता नहीं राग - दरबारी
कभी नहीं हिम्मत थी हारी

हरदम यह प्रयास था करता
छूटे यह बंधन का रिश्ता

जो आता बोली सिखलाने
उसको ही वह लगा डराने

आँखें तिरछी करके बोले
कैसे नहीं द्वार तुम खोले ?

तरह-तरह के भोजन आते
मेवा, फल, उपहारें लाते

पर वह अपना झील न भूला
भागलपुर का रेशम झूला

रह - रह आते याद वो साथी
बैल, बाघ... चमगादड़, हाथी

उसने सोचा क्यों हम रोएँ
एक - एक कर सबको धोएँ

बूढ़ा एक रसोईया प्यारा
उसने दिया सहारा न्यारा

धीरे - धीरे दुख को जाना
यह रहस्य मत कभी बताना

इक दिन काली घनी रात में
बात बनी, दोनों की बात में

धीरे से पिंजरा था खोला
इधर - उधर भी तनिक टटोला

उड़ कर गया पराए देश
हँसता - गाता है परिवेश

जब वह बोली लगे सिखाने
मौन - व्रती हो लगा चिढ़ाने

आँखों से घूरता था भारी
राजा पर आफत थी सारी

❊ ❊ ❊

बत्तख

बत्तख राजा चले बजार
लेकर के पैसे दो - चार

सोचे गर्मी है भारी
पानी की दुनिया न्यारी

खेल - खिलौने क्या लेंगे ?
मित्रों को भी क्या देंगे ?

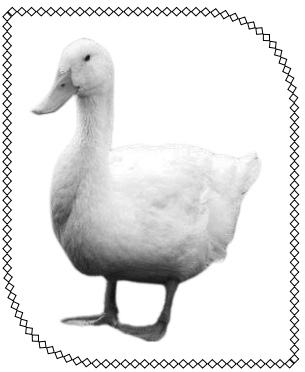

तब तक गन्ना-रस आया
बत्तख जी को मन भाया

जी भर पीए गटक-गटक
चाल चलें फिर मटक-मटक

ठेले वाले पैसे लो
जितने होंगे वापस दो

रस वाला तब यह बोला
पैसा तेरा है खोटा !

बत्तख की आँखें हुई गोल
कैसे इसे चुकाऊँ मोल ?

* * *

पनडुब्बी

ब्रह्मपुत्र की छोड़न धार
बहने से भी बहुत लाचार

इकलौता पन रहा सताता
सोचे बहती नदी समाता

सोचा हुआ कहाँ होता है
पर जो हो, बेहतर होता है

उसमें मछली रंग - बिरंगी
केकड़ा, घोघा, सीप सुंरगी



खूब तैरते करते प्यार
आपस में था... सद्व्यवहार

चिड़ियों का था आना - जाना
मौसम लगता बहुत सुहाना

तैरे डूबे औ इतराएँ
नहा - नहा कर मछली खाएँ

पास वहीं पर थी, बँसवाड़ी
चिड़ियों का ऐरोड्रम भारी

रहती वहीं एक पनडुब्बी
हौआ थी, सबके मन - चुभ्भी

बड़ी दूर से दृष्टि लगाएँ।
जल - जीवों पर उथल कलाएँ

मारे एक झप्पटा भारी।
खुश होता - क्या मछली मारी?

जलचर में हलचल थी मचती
नयी योजना मछली रचती

भोला बन जाती पनडुब्बी।
लगी बुलाने बौआ - बबुनी

ओढ़े राम - नाम की चादर
भरता रहे अनीति गागर।

काँव - काँव भी कभी न बोले।
घाघ बड़ा था... मुँह ना खोले

❊ ❊ ❊

कठफोड़वा

चोंच बड़ी तो ज्ञान नया है।
तिनका - तिनका क्यों रटना है ?

पेड़ों में ही छेद बनाएँ
अपना घर भी वहीं बसाएँ

दिन भर उड़-उड़ कर फल खाएँ
साँझ ढले अपने घर आएँ

दिन भर करते रहे प्रयत्न
खुश हो जैसे पाए रत्न



पेड़ों को इस तरह सताया
तन में उसके घाव बनाया

पीली सुंदर फूर्ति काया
लम्बी चोंच... धार है पाया

इधर-उधर जा कीड़े खाऐ
खूब पकौड़े के गुन गाऐ

चिड़ियों का था - बढ़ई राजा
कोयल बोली - आम लो ताजा

मुझे बना दो पलँग मयूरी
पचकारी कर... रंग सिंदूरी

कौआ बोला - सोफा दो
कभी नहीं तुम धोखा दो

* * *

चकोर

मैं कवियों की प्रिय हूँ संज्ञा
उपमा प्रेम की - मधुरिम संध्या

चकवा - चकई प्रेम अनूठा
फिर भी उनसे भाग्य है रूठा

कहे कबीर सुनो भई साधो
प्रेम-मिलन में बहुत है बाधो



पाकिस्तानी राष्ट्रीय पक्षी
तीतर जैसा कुछ समकक्षी

पहाड़ों पर बसती न्यारी
मुझसे कई मान्यता प्यारी

कहते मैं हूँ - चाँद निरखता
सारी रात यही मैं करता

भला बताओ - में क्यों जागूँ
चंदा से मैं क्यों कर माँगू?

हाँ! विषयुक्त पदारथ भाँपू
लाल नेत्र हो जाए जाँचू

अपनी सीमा कहाँ बताऊँ?
जब चाहूँ आऊँ या जाऊँ।

बम, बारूद, आतंकी हमला
निर्दोषी को मृत्यु - छलना

हाय रे ! कब तक ऐसे होगा ?
शांति का उद्घोष तो होगा

ग्रेनाइड का खेल भयंकर
धर्म बढ़े यह विष है भीतर

खाने को दो-जून नहीं है
सब उन्माद - जुनून यहीं है

जो अतिचारी रहा भयंकर
बदल गई वो निशा निरंतर

बंद हो बंदूखी - पठशाला
पढ़ो पाठ मानवता वाला

सुन रे, साधो ! कहे कबीरा
भोर मिला चकवा जोगीरा

❊❊❊

फुदकी

जैसा नाम वही है काम
फुदकी फिरती सकल जहान

चिकुर, कूजनी, और सिलेटी
नाम तेरे मीठे चकलेटी।

संस्कृत में पुरलिका कहाऊँ
इसीलिए संस्कृत-गुण गाऊँ

पढ़न गई गुरुकुल दरबार
गंगा - तट नगरी हरद्वार



पंड़ित एक - एक से दिग्गज
पढ़े वेद कल्याणी... रंजक

हमको 'वयं पठंति' सिखाया
किंतु हमें खेलंति ही भाया

सुबह-सुबह उठ पुष्प था चुनना
फिर जंगल से लकड़ी बिनना

योग कराते थे जब बाबा
और निखरती थी कुछ आभा

फिर कहते योगा मत कहना
यह अशुद्ध परदेशी गहना

वल्कल-वसन, कमंडल, माला
चुटिया, तिलक और मृग-छाला

सबका यज्ञोपीत कराया
पीला वस्त्र, जनेऊ भाया

पंडित बोले, जाओ काशी
वहाँ मिले जोगी - संन्यासी

फुर्र से हम सब उड़ते भागे
पकड़ो हमको, रहेंगे आगे

❊ ❊ ❊

लवा

देख बाज की झपटा - झपटी
सोचा लवा बाज है कपटी।

हरदम रहता मुँह छिपाएँ
कभी नहीं जी भर मुस्काएँ

रहता यही सोचता मन में
क्या रखा है इस जीवन में ?

जाने कब मारे वह लपके.?
इसीलिए मैं रहता दुबके।



बहुत बड़ी है उसकी सेना
डर - डर कर भी क्या है जीना?

नहीं ठीक से मैं खा पाता
रात-रात भर सो नहीं पाता

इतना दर्द भरा यह जीवन
मुक्ति ही मिल जाए तत्क्षण

यही सोच कर फँसुरी लाया
सिलिंग फैन में उसे बँधाया

जैसे ही दरवाजा ढाँपा
खग - समूह ने अनरथ भाँपा

लवा! लवा! सब लगे बुलाने
कुछ तो वहीं लगे चिल्लाने

यह अपराध करो मत भाई
जीवन जी लो तुम हरषाई

हिम्मत से तुमको है जीना
खून के घूँट कभी मत पीना

भय का भूत सर्वथा त्यागो
मन की शक्ति से तुम जागो

क्या कर लेगा बाज तुम्हारा ?
नाक की चींटी सिंह - पछाड़ा।

❊ ❊ ❊

नीलकंठ

नीलकंठ है मग्न ध्यान में
आँखें मूँदें राम नाम में

आँखें बड़ी शांत सी कोमल
श्वेत- अरूण है मादक श्यामल

शिव का रूप इसे हैं मानें
विजयादशमी को शुभ जाने

रेल किनारे बिजली - तार
उस पर दिखी अनगिनत बार



यात्रा का फल दे शुभदायी
बोली इसकी सुन ना पाई

एक वंदिनी कुशल चितेरा
उसने था तुमको जो टेरा

जा बैठी तुम कैनवास पर
बसी मेरे मन-वन में आकर

क्या खाते हो यही बताना
बना रही चुल्हे में खाना

तुम्हें मिले ना पिंजरा - प्यार
सजग सदा रहती सरकार

* * *

कलँगी

सिर पर होती कलँगी प्यारी
इसीलिए मैं सबसे न्यारी

जैसे बारातों में दुल्हा
जैसे घर का साँझी चुल्हा

वर के संग चले बारात
वैसे चिड़िया हूँ मैं खास

उड़ती हूँ निर्भीक गगन में
फूदकूँ खेतों में उपवन में

बच्चों ने क्या शोर मचाया ?
कलँगी दिखी, तमाशा आया।

सरकारी कितने आयोजन।
गैर - प्रशासन करे नियोजन

फिर भी धरती रही सिसकती
कसती हिम्मत और फिसलती

दोहन मेरा हुआ निरंतर
फटा जा रहा है उर-अंदर

प्रकृति को सब करें प्रदूषित
कोई कसर नहीं इनके चित

अब फिर हाथ धरे क्यों रोते
हाय ! हुए क्यों दिन ये खोटे?



प्रकृति जैसा नहीं गुरू है
उससे ही तो पाठ शुरू है

मुझको देखो बड़ी अनूठी
कभी दिखी क्या तुमको रूठी?

पर यूँ ही यदि जुल्म करोगे
कलँगी के बिन फिर तरसोगे

❊ ❊ ❊

तोता

ना मैं कौआ, कोयल होता
मैं हूँ तोता, मैं हूँ तोता

कितना सुंदर रूप हमारा
हरे पंख हैं, चोंच है न्यारा

लाल रंग हो दाड़िम जैसे
करे सवाल-सभी कुछ ऐसे



फल का प्रेमी, भुट्टा खाता
देव - पोखरी रोज नहाता

पेड़ों पर बैठूँ, इतराऊँ
सारे वन में उड़ूँ लुभाऊँ

सुनूँ भागवत रुचि मन लाई
देव-दनुज सब करें बड़ाई

लेकिन कभी दुखी हूँ होता
मुझे बनाया क्यों कर तोता ?

मेरा सुंदर रुप ही मेरे
बना गया बंधन के फेरे

पिंजड़ा मुझे तनिक ना भाता
मेरा है असीम से नाता

मन करता कैसे उड़ जाऊँ
कैद - तोड़ उन्मुक्त कहाऊँ

मार-मार कर मुझे रटाते
रट्टू तोता नाम धराते

मैं क्यों रटूँ - राम औ सीता
स्वयं वेद औ पावन गीता

मोदी जी बस इतना करना
जहाँ-जहाँ पिंजड़ा हो धरना

कड़ी सजा के वे करतूती
उनकी बंद करो तुम तूती

❊ ❊ ❊

बुलबुल

बुलबुल, बुलबुल क्यों आकुल।
वन में क्यों करती चुलबुल।।

छोटा सुंदर रूप तुम्हारा।
कलँगी भी है खूब सँवारा।।

तेरे सुर का क्या है कहना।
सप्तसुरी बाँसुरी कहो ना।।

फुदक-फुदक कर जो मन खाती।
मन करता फुर्र से उड़ जाती



तिनका-तिनका कहीं से लाती
सुंदर सा घोंसला बनाती।।

कभी नहीं तुम। पढ़ने जाती।
यह चिंता है मुझे सताती।।

मुझे पढ़ाई कर क्या करना।
मुझे नहीं है बाबू बनना।।

अंग्रेजों ने नहीं पढ़ाया।
अब स्वतंत्र हूँ, देशी काया।।

कवियों को प्रिय बोली मेरी।
मैना - तीतर है - हमजोली ।।

* * *

कोयल

कोयल है बसंत की चिट्ठी।
पहली बूँद की सोंधी मिट्टी।।

आमों का बगिया है तीरथ।
कहें वेद-धुन वर्णित कीरत।।

कू-कू करके करे बाँवरी।
धीरे - धीरे धरो पाँव री।।



फूलों से गहरा है नाता।
गीत सुनाना इसे है आता।।

मीठी बोली इसकी उपमा।
सबको कर लेती है अपना।।

क्वारी की है, पहली चितवन।
हुई सगाई तो है मधुवन।।

कौए को है मजा चखाती।
अंडे उससे रही सेवाती।।

रंग श्यामला, स्वर है मधुरम।
इससे बनी हुई है अनुपम।।

❊ ❊ ❊

हंस

सरस्वती का वाहन हंस
ज्योतिर्मय विद्या का अंश

तिमिर मिटाता है जीवन के
काटे दुर्बुद्धि के दंश

माँ के साथ विराजे हरदम
नीर-क्षीर विवेक है उत्तम

श्वेत-शांत स्मित स्वरूप है
ज्ञान, भक्ति वैराग्य समागम

शिक्षा, विद्या, सुर की देवी
होती रहे त्याग की वृद्धि

जिस पर हाथ धरो तुम माता
उसे प्राप्त हो जगत-प्रसिद्धि

हँस मिटाऐ सब मलीनता
दूर करे जीवन की दीनता

जग में विविध भाँति बाधाएँ
दूर करे सब उनकी चिंता



* * *

गौरैया

माँ जब चावल को फटकाती
दूर कहीं से चिड़िया आती

खुद्दी खाकर खुश हो लेती
उड़ कर दूर पेड़ तक जाती

आँगन की शोभा थी मेरे
हर मौसम में थी मुस्काती

भूरे - काले पंखों में वो
चीं चीं स्वर में थी कुछ गाती

छत पर छींटे हमने दाने
कौतुक करती नहीं अघाती

यह मौसम की अग्रदूत है
प्लेग लगा पहले बतलाती

बाबा राघव दास पुणे से
बन बैठे बरहज के बासी

लोप देख वैज्ञानिक सहमे
कहाँ गई यह चिया प्रजाती

नहीं बहुत हैं ये शुभलक्षण
चलो बचाऐं जीवन - थाती

यह पहली चिड़िया है जो कि
बच्चों के मन बहुत लुभाती



* * *

थरथरकंपा

थरथरकंपा भरे उड़ान
साँझ, दुपहरी और विहान

लाल गिरदिया मुझे बुलाए
प्रवासी कह कर अपनाए

लज्जालु सी आँख छिपाए
सावधान होकर मुस्काऐ



पूँछ हिलाती रहती हरदम
शीत मास में भरती दमखम

मिलूँ सकल भारत में घूँमू
म्यांमार तक मस्ती झूँमू

भीति के खोखले रजाई
मेरे घर भी आना भाई !!

कपेक्षक है नाम हमारा
संस्कृत ने है हमें दुलारा

ईख खेत में फुनगी बैठूँ
डाली हिले तो मैं भी ऐठूँ

पूँछ हिला कर कहती आना
मूँगफली औ चना है खाना

❊ ❊ ❊

नीलकंठी

दिखने में अति सहज सरल हूँ।
नीलकंठी मैं गरल पिये हूँ।

दिख जाती अक्सर पेड़ों पर।
झाड़ी तथा आद्र भूमि पर।

बोलूँ जब उपवन मँहकाऊँ।
छिपू, दिखूँ, सबको तड़पाऊँ।

छोटी हूँ पर बड़े काम की।
यात्री हूँ मैं जगन्नाथ की।



दे दो भिक्षा उड़िया जाऊँ।
जा कर खिचड़ी भोग लगाऊँ

वहीं कृष्णमय सागर खारा।
है, दाऊ, सुभद्र संसारा।

जहाँ गए चैतन्य समाए।
प्रेममयी राधा कहलाए।

इस तीरथ पर जो भी जाए।
जन्म दरिद्री की मिट जाए।

रथ निकले तब राजा खींचे।
सड़क बुहारे... राहें सींचे।

भीड़ देख अचरज ये आए।
मानव - सागर यहाँ समाए।

जय-जय कार होय नभ-भेदी।
आते सुखी होय या खेदी।

चलो कहानी बहुत सुनाई।
तनिक खिलाओ, कह मुस्काई।

❊ ❊ ❊

चील

चील उड़े लम्बी परवाज
उसको कहते पंख - नवाज

एक बार में साहस भरता
बहुत देर तक नभ में रहता

कौआ जैसा है दिखता
पर आचरण नहीं मिलता

आँगन में ये कभी न आए
बच्चों में कौतूहल लाए



चील-चील कर जब चिल्लाए
चील उड. चला पंख फुलाए

एक झम्पटे में ले भागा
उसके मन को जो भी माया

देख चील का अत्याचार
सब मिल बैठे करें विचार

इसको हम सब शुद्ध बनाए
बुद्ध-पास इसको ले जाए

जीवों से गौतम को प्यार
अहिंसक हो मेरा यार

चील के मन परिवर्तन आया
बुद्ध से वह भिक्खू बन आया

भिक्खू बन कर लगा माँगने
लोक - दया को लगा मापने

जब इच्छा थी रही अधूरी
कहता फरमाईस कर पूरी

नहीं खा सका फल औ दाना
रोज माँगता ताजा खाना

तरह-तरह पकवान बनाओ
सब मिल कर कुछ मुझे खिलाओ

कौन बनाया आज कचौड़ी
कौन छानता रहा पकौड़ी?

पूआ के दिन कब आऐंगे ?
रबड़ी जी भर कब खाऐंगे?

लोगों में हलचल थी भारी
अब यह लाया नयी बीमारी ?

भिक्खू बन कर जब से आया
रोज नए फरमान सुनाया

इसने सही नही ली शिक्षा
झूठी कर दी बुद्ध की दीक्षा

इसने लिया जरूर कटोरा
पर बन बैठा बहुत चटोरा

चोला भर इसने है बदला
पर मन है बस टूटा तबला

ध्यान, जप नहीं इसे सुहाता
भोजन बना हुआ है भ्राता

कहता कुशीनगर जाऊँगा
और नए गुण ले आऊँगा

❊ ❊ ❊

चातक

चातक की आवाज सुरीली
जैसे कोई राज लजीली

यह साधारण जीव नहीं है
इसका बिछड़ा पीव कहीं है ?

रह - रह कर उसको है टेरे
आओ! बादल हुए घनेरे



यह कैसी कुंडली बनाई ?
मिलन नहीं, हो गई जुदाई

विरह बनी मैं वन- वन डोलूँ
पिहूँ-पिहूँ कर जी भर रो लूँ

सीता माँ ने पक्षी पाले
मैं भी उनके हुआ हवाले

बहुत प्रेम खग-जीव से करतीं
कभी नहीं पिंजर में धरती

दाना, फल - फूलों से पालें
पेड़ों पर झूला भी डालें

सबको उसके नाम बुलातीं
बोधा, जोधा, औ केसराती

हम सब उनके आते पास
पूरी होती सबकी आस

जब वे फुलवारी को आतीं
कूद - कूद हम खुशी मनातीं

गौरी माँ ! से करे कामना
कभी न होए कष्ट सामना

सीता विदा अवध को होतीं
हम सब की आँखों थीं रोतीं

राजा राम ! मिले सुंदर वर
लक्ष्मण बाहुबली हैं- देवर

महलों का सुख मिल ना पाया
जंगल - जंगल भटकी काया

भले रची लीला हो भारी
दुख पायी मेरी सुकुमारी

रावण का छलना ले जाना
अपनी मृत्यु - बुलावा लाना

भला होय हनुमान तुम्हारा
जनक - सुता का कष्ट - उबारा

जला दिए सोने की लंका
बजने लगा तुम्हारा डंका

मिलन कराने में हो आगे
देखें तुम्हें नवग्रह भागे

स्वाति की बूँदें बरसाओ
मेघराज को धर कर लाओ

हम भी सीता के हैं सहचर
सदा रहेंगे, तेरे अनुचर

* * *

इमु

इमु - इमु है मेरा नाम
आस्ट्रेलिया में बहुत है सुनाम
राष्ट्रीय पक्षी हूँ उनका
जैकेट पहनूँ, निकलूँ शाम

इतनी सुंदर गर्दन जैसे
कहो सुराही कह दूँ कैसे
पैर हुए जाँबाज हमारे
पंखों पर हैं पंख के पैसे



रंग श्वेत, भूरा, धूमियाना
आँखें प्यारी, चोंच निशाना
मुझे देख सब रहें देखते
मन मेरा कपड़ा लुधियाना,

अभी कोरोना आया भारी
पूरे विश्व में है महामारी
उसकी चाल बहुत है खोटी
देश-हितों में कर ली यारी

इम्मू कहा - यहाँ मत छूना
मुझे लगाना तुम मत चूना
मैं समुद्र में बड़ा दीप हूँ
भाग न पाओगी... समझी ना !

अपने वतन लौट ही जाओ
जिसकी करतब उसको खाओ
हम हैं सदा शांति के अगुआ
राग दूसरा मत तुम गाओ

भारत से मैत्रयी पुरातन
शिक्षा, खेल, बणिक, अनुशासन
हाथ मिलाते, गले लगाते
कठिन समय में, है अपनापन

मेरा मान अलग रोबीला
राजस्थानी कुँवर छबीला
रात अभी है, चुप से भागो
मुश्किल होगी, जगा कबीला

* * *

मछलीमार

भक्खूमल था मछलीमार
खा-पीकर करता व्यापार

जब देखो तब बैठा खाने
कभी न पढ़ने और नहाने

खा लेता फिर हाथ था धोता
फिर पूछे-कुछ और है न्यौता ?

उसने सीखी एक पढ़ाई
खाओ भाई ! खाओ भाई !



खाकर तनिक डकार न लेता
'पेट भर गया' कभी न कहता

उसे देख अचरज में सब थे
भक्खू नाम पड़ गया तब से

तला भुना सब रहा पचाता
लीवर को वह बहुत छकाता

गर्म मसालेदार या भाजा
सबको कहता अंदर आजा

उसकी करामात थी भाती
मछली पीट रही थी छाती

बगुला बोला - रो मत बहना
सच- सच केवल मुझसे कहना

मछली सोची - यह कमजोर
पाकेटमार से आगे चोर

इन सब में है साझेदारी
आते दोनों बारी - बारी

एक ने पकड़ा ले उड़ भागा
दूजा, दृष्टि गड़ा कर साधा

तुम जैसे जब भाई होंगे
कैसे भला कसाई होंगे ?

❊ ❊ ❊

मोरनी

मोरनी बोली आधी रात
आने वाली है बरसात

बादल आए बड़े घनेरे
बादल पर बादल के फेरे

गुमसुम हवा हुई वाचाल
साँय-साँय बोले विकराल

अँधियारे में डोले नीम
पीपल, वट, सेमल से भीम

खिड़की बंद, दुआरा डोले
खड़-खड़ कर लेता हिचकोले

बिजली चमके कड़-कड़-कड़
गरजे बादल घड़--घड़--घड़

चिड़ियों के गिर गए घरौंदे
छप्पर - छानी औंधे - औंधे

अब बारिश की बारी आई
बरसे... कंबल और रजाई

बूँदों से मिट्टी हुई सोंधी
निकले बिल से घोंघा - घोंघी

रूद्र रूप शृंगार हो गया
वृहद रूप में प्यार हो गया

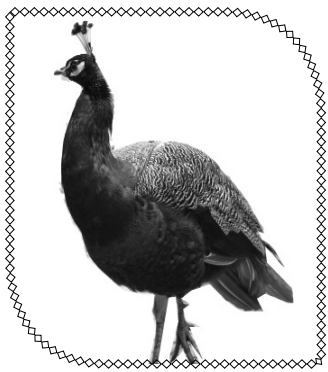

धरती अपना रूप सजाती
जल से जीवन की है थाती

पंख पसारे नाचे मोर
कहाँ गये मेरे मोहन चोर ?

देखो हमने पँख लुटाए
चरणों में सौंदर्य बिछाए

इसीलिए हम शीश धराए
मोरमुकुट तुम भी कहलाए

मोर - मोरनी नाचे घोर
बीच बाँसुरी चितवन - चोर

❊ ❊ ❊

काला कौआ

भूटानी पर्वत घाटी
पावन सी उसकी माटी
बौद्ध यहाँ चिंतन - धारा
प्रेम सदा से परिपाटी

देव - अतिथि का है स्वागत
यहीं कहीं बस गए तथागत
आसमान मुट्ठी में लगता
सड़कें, पेड़ों की इमारत



काला कौआ बोल उठा
जैसे कुछ रूठा - रूठा
शैलानी पत्थर मारे
तब तक पुलिस मूँछ ऐंठा

यहाँ करो मत तुम खिलवाड़
ये बौद्धों का देश - बिहार
कौआ है राष्ट्रीय पक्षी
करते हम इसका सत्कार

नहीं जानते, माँफ किया
पत्ते भी छूने न दिया
नदिया - क्या दर्पण होगा ?
चुल्लू में ज्यों मेघ लिया।

राज - घरानों की शानें
रामायण को भी माने
हिंदी - पढ़ना है अनिवार्य
चैनल सभी यहाँ जाने

काला कौआ, तुम आना
मेवाड़ी दूँगी खाना

साथ में दूँगी इक तलवार
पगड़ी भी लेते जाना।

***

देशी कौआ

कौआ एक भयंकर काला
पर था दिल से बड़ा निराला

गाँव किनारे बँसवारी में
रहता - खाता था झाड़ी में

देख रहा पीढ़ी दर पीढ़ी
चढ़ता रहा उम्र की सीढ़ी



पंख हो गए सभी पुराने
सुने पुराने फिल्मी गाने

आंदोलन की कथा सुनाए
अंग्रेजों की व्यथा बताए

गोरों का ऐसा था शासन
जैसे जन्म लिया दुस्सासन

हर चीजों पर कर लगवाते
नमक के लिए भी तरसाते

मजदूरी पर मार थी मिलती
सदा उड़ाते रहते खिल्ली

काले - काले रहे कहाते
जी भर करके... रोज सताते

रात बिताते थे सब जग कर
आज सुने - आंदोलन जी भर

मैं उसमें भी भाग लिया था
चंपारण में साथ दिया था

निलहा - खेती, माँ रोती थी
बच्चों पर लाठी बजती थी

खून - पसीना रहे बहाते
पर गोरे गुलछर्रे उड़ाते

डोमाठ की कोठी सुंदर
पर गोरे अब लगे छुछुंदर

असमय मरता रहा किसान
कहाँ सो गये हो भगवान ?

गाँधी जी, राजेंद्र बाबू
मन के सीधे, सच्चे - साधु

लगे दुखी होकर समझाने
बीत गए वो प्रथा - जमाने

असहयोग आंदोलन होगा
पहनें नहीं जुल्म का चोंगा

जेल भरो, यह उच्च था नारा
सत्याग्रह ने था ललकारा

मैं भी उसको रहा छकाता
छिप-छिप कर सब भेद बताता

निलहों ने जयकार लगाई
अब दुर्दिन भागेगा भाई !

अंग्रेज़ी शासन चकराया
अब यह बुड्ढा कहाँ से आया

गाँव - गाँव में आँधी आई
मैं जिंदा गवाह हूँ भाई !!

❊ ❊ ❊

धनचिड़ी

लम्बे पंख वजन में भारी
सुंदर सी धनचिड़ी दुलारी

पीपल पर आ - आ के बैठे
दिखे, छिपे, गाकर कुछ ऐंठे

लोग देखने को जब भागें
ये भी भागे, आगे-आगे



ऐसी है मान्यता मनोहर
इसे देख धन मिलता सुंदर

पर इस लोकरीति पर हँसती
कमी मुझे पैसे की डँसती

मैं बतलाऊँ किस घर जाय
डायन मँहगाई मोहे खाय

बिन स्वेटर के काम चलाऊँ
किकरूँ हाथ रगड़ जी पाऊँ

आग तापने जब मैं जाती
सबको पैसा याद दिलाती ?

कोई है करोड़ का स्वामी
कोई है कुबेर सा नामी

खाने को दो जून नहीं है
लकड़ी है तो नून नहीं है

अर्थ - व्यवस्था है लाचार
बैठक पंच सितारा यार

भरे पेट भोजन - संभाषण
दंगा करें... कहें अनुशासन

मत देखो मुझको अब भाई
कर लो थोड़ी और कमाई

शाम ढ़ले हम फिर गपियाँए
दो माचिस... बीड़ी सुलगाँए

मलेशिया है देश हमारा
आ जाना है खुला दुआरा।

❊ ❊ ❊

अगिया

गाए नाचे सुर दे ताल
सुंदर सी अगिया बेताल

छिप कर ऐसे सुर में गाए
खोजे किन्तु, खोज ना पाए

अल्ली बाबा, चालीस चोर
मरजीना सी है... बरजोर

मीठा बोले, करती घायल
कहाँ गिराई-पाँव की पायल



बुश लार्क - कह इसे बुलाते
बुश साहब भी रहे बुलाते

पर इसने अपने मन ठानी
लक्ष्मीबाई बनी भवानी

क्या मजाल ये दीख तो जाए
यही सताना, इसको भाए

तुर्रा यह कि बोले खुल कर
छिप जाए कुछ बोल-बोल कर

मानों जैसे हो ललचाती
अक्कड़-बक्कड़ हमें खिलाती

बच्चों ने जब झाड़ी घेरा
सोचे देखें - कहाँ है डेरा ?

मुँह पर उँगली रहे सहमते
आँख चौकसी हैं कुछ कहते

कान दिए पदचाप हैं सुनते
कितने - कितने सपने बुनते

पर धीरे से हो गई फुर्र फुर्र।
बच्चे दौड़े - करते हुर्र - हुर्र

❊ ❊ ❊

मुर्गा

फ्रांस देश का राष्ट्र - सितारा
पक्षी उनका हूँ मैं प्यारा

फ्रांस बहुत आते सैलानी
देश बहुत सुंदर अभिमानी

मेरे दोनों सुंदर पाँव
डेढ़ टाँग कहते विद्वान



कब देखे मेरे टूटे पैर ?
मैं तो सदा मनाऊँ खैर !

रच मुहावरा मेरे उपर
बना दिए सब मुझको मोहर

गलत बात पर हैं जो अड़ते
मेरी उपमा देकर कसते

सतरंगी सुंदर हैं पाँखें
नहीं कभी भी बगले झाकें

सबका ही कल्याण मनाऊँ
पर अपना दुख किसे सुनाऊँ ?

मेरे अंग - अंग प्रतिरक्षक
बने हुए सब जीव हैं भक्षक

अंडे तक को छोड़ न पाते
और अधिक क्या हम बतलाते?

शाकाहारी बनो निरंतर
है प्रोटीन राजमा बेहतर

दाल, अन्न, फल, मेवा-खाओ
धर्मयुक्त हो मुझे बचाओ

खुशियाँ हो उसकी या तेरी
गर्दन कटती आखिर मेरी

बहुत दुखी हूँ बच्चा जन कर
आँख सामने बिका देख कर

पर कैसे मैं वंश बचाऊँ ?
अपनी विनती किसे सुनाऊँ।

खान - पान संतुलन बिगड़ता
तब जाकर कोरौना धरता

ले डूबा है सकल विश्व को
छोड़ो जीवों के शरीर को

***

सफेद बगुला

फैक्टरी से निकला जो पानी
अनगढ़ ताल करे मनमानी

उपर बुदबुद झाग रंगीले
प्लास्टिक तैरें नीले - पीले

काई में केमिकल छिपा है
जहाँ विकास की कथा लिखा है

नीचे जीव - जंतु जलचर के
साँसों को मछली भी तरसे

दमा हुआ है हर जीवों को
चैन कहाँ-तन, मन घावों को?

इस पर भी तो चैन कहाँ है ?
बगुला का मन फिर दहका है

डरो नहीं - विद्रोह करूँगा
तुम्हें बचा कर स्वंय बचूँगा

'बको ध्यान' का यज्ञ करा कर
जल को अमृतमयी बना कर

पर्यावरण बचाने खातिर
खोज निकालूँ है जो शातिर

बन सुभाष दिल्ली पहुँचूँगा
जय भारत - जय देश करूँगा

तुम सब की पीड़ा हर लूँगा
मैं भी शाकाहार करूँगा



* * *

देशी मैना

अकड़ी बहुत ठंड़ से मैना
पंख फुलाए बाग में...
सूरज दादा कब आओगे ?
संकट के इस राग में

नहीं सूझती डाली - टहनी
ऐसा छाया है कोहरा
आवाजें सब दबी-दबी हैं
माघ बन गया है मोहरा



कैसे जाऊँ मैं प्रयाग को ?
तड़प रहा है मेरा मन
स्वेटर, शाल, नहीं कंटोपा
कैसे ढकूँ ठिठुरता तन ?

दाना दिखता नहीं कहीं भी
भूख सताती जोरमजोर
आँख मिचौली क्यों करते तुम
खेल रहे क्या, पुलिस औ चोर

पहले दादी के बोरसे में
मिलती गर्मी, दाना था
हीटर, ए सी, की दुनिया से
दूर - दूर अनजाना था

मेरे पीले काजल का भी
रंग हो गया है फीका
पछुए का दीवानापन है
लगता टूट गया ठीका

मेरी इस चिट्ठी को दादा
बहुत गौर से तुम पढ़ना
सबका ही तो हाल बुरा है
खुल कर हँसना... सब कहना

लो अब लिखना बंद करें हम
सादर करो नमन स्वीकार
तुम केवल आदेश ही देना?
हम प्रहरी नित हैं तैयार

***

कोतवाल

बैठ भैंस के पीठ सोचती
कितनी सुंदर मिली सवारी
खाने के सब साधन इसमें
अक्ल बड़ी... मैं हूँ मतवारी

तू चरता, चर खेतों में
बिना टिकट यात्रा मेरी
कभी उड़ूँ.. फिर उड़ कर बैठूँ
धीमी चाल बनी तेरी



सब पक्षी की कोतवाल हूँ
सबकी अक्ल ठिकाने हूँ
बचा नहीं कोई है मुझसे
लोकतंत्र - अफसानें हूँ

किसी चिड़ी को गलती से भी
घर में कभी न आने दूँ
तत्पर हूँ बच्चा रक्षक में
उनको नहीं सताने दूँ

'वी' जैसी हैं पाँखें काली
फुर्तीली, चंचल चमके
सधा निशाना... तीरंदाज़ी
मेडल कई ... सजे तमगे

बाग - बगीचा..., ताल - तलैया
मेरे प्रिय... मेरे व्यवहार
आँगन - आँगन मैं ना डोलूँ
पुरखों की बातें स्वीकार

दृष्टि हमारी बनी कैमरा
दुश्मन पर है - कड़ी नजर
आतंकी पर हूँ - आतंकी
वैसे चर्चित भली खबर

***

मछीरंगा

मछली जल की है रानी
गीत, मधुर है बच्चों का
हरा समंदर... गोपी चंदर
क्या हो बस के धक्कों का

नील पंख... चोंच है लम्बी
निकट ताल के पास बसेरा
मछली के ही आसपास में
दोस्त बनूँगा ... मैं तेरा



बहुत द्रुति से मैं हूँ उड़ता
किल - किल किल - शब्द करूँ
खाऊँ - पीऊँ मौज करूँ बस
सब आयोजन रद्द करूँ

जल के अन्य जीव भी प्रिय हैं
घोंघा, सीपी, केंचुआ ... बेंग
फिर भी मैं हूँ शाकाहारी
जात - पात का नहीं है घेंघ

मेरे नीले पंखों से कुछ
नीलकंठ का भूल करें
पर मैं सबको सत्य बताऊँ
उसकी आँखें बात करें

बहुत सहज है मेरा मिलना
मछुवारा चाचा है मेरा
मेरे कई निशानों पर ही
डाल दिया... उसने डेरा

शाम ढले दोनों घर आते
मेरा नीड़ - बसेरा है
दोनों की पर आस एक है
प्यारा लगे सबेरा है

***

श्यामा

श्यामा सुंदर छटा निराली।
फुदक रही डाली से डाली।

मस्ताती... सावन गहराते
कहाँ-कहाँ से बादल आते

हम सब छिपी हुई घाटी में
सूखा दर्द छिपा माटी में।

सोच रही अच्छे दिन आएँ
हम भी तो कुछ कर दिखलाए

एक आसमाँ कैनवास था
वही दृष्टि का चिरनिवास था।

इंद्रधनुष कब यहाँ उगेगा
सातोरंगी वलय खिलेगा

सूरज की तपती पठशाला
जल्द लगाएगी अब ताला

काली घटा घिरेगी भारी
पहली बारिश भींजे नारी।

डाल - डाल अँगड़ाई लेंगे
हम सब गा-गा के फुदकेंगे।

चारो ओर छाए हरियाली
छिपे - देखेंगे हम मतवाली



बादल जैसी हम हैं काली
पर मेरे दिल में है लाली

सबका सुंदर सगुन मनाएँ
श्याम दिखे हम बहुत लजाएँ

❊ ❊ ❊

क्रौंच

मैं हूँ रामायण की भाषा
छंद अनुष्टुप का विख्याता

मेरे प्रिय को तीर ने मारा
वही कलम बन कथा है उतरा

सुंदर सी है मेरी सुकाया
राम-कथा सबने है गाया

बाल्मीकि के नायक राम
धनुधारी अभिनव अभिराम

वे ही चला रहे हैं सृष्टि
शरद, बसंत सूखा या वृष्टि

वन - सरोवरों में है वास
नहीं टूटती शबरी - आस

धन्य हुई वो व्यथा - कहानी
प्रिय - वियोग की अमर कहानी

जिसने राम - कथा उपजाया
जग - हित स्व बलिदान चढ़ाया

पक्षी - जीवन नहीं अकिंचन
दर्शन सरस सुरीला सिंचन

मुझे पूर्वजों पर अभिमान
अलौकिक, लौकिक अभियान

मानव - जीवन के सहगामी
संपुट हम दोहावली स्वामी



* * *

घाटो

भादो में है खेले घाटो
हिम - तराई से आती घाटो

मिग सी तीव्र उड़ी है घाटो
बचपन की एलबम है घाटो

हुई साँझ तो उतरे घाटो
दौड़े, नाचे, गाए, घाटो।

हम सब एकटक देखें घाटो
फिर हम खेलें घाटो-घाटो



घाटी के रंग लाती घाटो
इसीलिए संज्ञा है घाटो

देख हमें तुम खेल दिखाती
मदारी, नेटुवाइन घाटो।

शिवा घाट से चले नहा कर
गोशाला में घूमे घाटो।

सब्जी-मंडी पर्स लगा के
खाती पान अघाती घाटो

कहाँ से आती - बोलो घाटो
कहाँ तुम्हारा घर है घाटो ?

करे दोस्ती संग हमारे
कुट्टी करे कभी ना घाटो

* * *

फाख्ता

फाख्ता चले चाल मतवाली
बहुत हिड़ोली, बहुत बवाली
जब बोले तब मिसरी घोले
कभी सुनाती है कौव्वाली



छोटी सी पर रहे फुदकती
डाल - डाल पर फिरे चहकती
बड़ी सतर्क दृष्टि है इसकी
नटखट बन कर रहे मटकती

मैदानों की है रहवासी
चली जाय मथुरा औ काशी
हरिद्वार का टिकट कटाया
बाबा रामदेव संन्यासी

इसे कोरोना नहीं सताता
हाथ न धोए हाय विधाता
जब होगी इसको बीमारी
कौन बनेगा जीवन - दाता

* * *

घोघर

घोघर चिड़िया आओ तो, एक छप्पका लाओ तो।
देखो बच्चे देख रहे-करतब कुछ दिखलाओ तो।

तुमको ताल बुलाता है, राग - बतीसी गाता है।
भोजन तेरा लाई है, जल के नीचे काई है।



उड़ते-उड़ते झट आया, जलकुंभी में चोंच धँसाया
बच्चे चिल्लाऐ अम्मा, घोघर गया बचा रम्मा!

अम्मा बोली-सुन बच्चे, इनके करतब ही ऐसे।
नहीं नाक से लेते साँस, मुँह से लेते हवा-बतास।

अभी निगल कर आएगा, कई जीव को खाएगा...
पेट भरेगा इसका तो... दूर देश उड़ जाएगा।।

खाता है ये अटर-पटर, ताल-तलैया औ पोखर।
बच्चे बोले बहुत खरा-इसे कोरोना नहीं धरा?

बहुत दिमाग चलाते हो, पढ़ने से डर जाते हो।
यह है सदा जीवभक्षी, प्रकृति से है अनुमति।

इसको अभी नहाने दो, जी भर इसे अघाने दो।
तुम सब बस्ता भी खोलों, क्या पढ़ना है -अब बोलो।

* * *

मघा

पानी की नयन सी
छितवन की छयन सी
दिख जाती है कभी
मघा री चयन सी

जल हों कमल दल
या कमलिनी के तल
वहाँ ये खेलती
शैवाली - दल सी।



जाने क्या खोजती ?
चिड़ियों की मौज भी
या कि प्रतिबिम्ब देख
मगन है यहीं

छिपती है शरमाती
कम ही ये दिख पाती
जोड़े से उड़ जाती
चैता के गुण गाती

इतने पक्षी प्यारे
जैसे जुगनू तारे
ईश ने बना इनको
खुद से खुद ही हारे

नील जल नील गगन
श्वेत कमल, टेस नयन
बैंगनी से फूलों के
श्वेत-श्याम हैं मगन

आओ न कभी ताल
हो जाऊँ मैं निहाल
बीत गए देखे बिन
मास कई... एक साल

***

गंगचली

कहाँ चली ओ गंगचली, रूको-रूको तुम खूब मिली।
मोदी सर का है कहना, घर के भीतर है रहना।

सुनती तनिक नहीं संदेश, माने नहीं कोई आदेश।
उड़ती रहती अज्ञानी ... करती अपनी मनमानी।

पढ़ो खबर अखबार पढ़ो, चैनल की सुन आगे बढ़ो
दूरदर्शन करे आगाह... जीवन की कर लो परवाह।

मत निकला तुम इधर-उधर, लगे कोरोना का न असर
आओ रानी बतियाँए गरम-गरम कुछ भी खाए।

वरना डंडा बरसेगा, पुलिस पकड़ कर धुन देगा।
मुँह पर जैन-धर्म बाँधो, सीधे अपने घर भागो।।

❊ ❊ ❊



मोर

तनिक नहीं मैं उन्हें डराता
मैं हूँ मोर-मुकुट का भ्राता

जो हैं सर्वकाल गिरिधारी
मर्दक - इन्द्र... भक्त-हितकारी

तनिक डरो मत लक्ष्य बनाओ
घबराओ तब हरि - गुण गाओ

जब मैं छत्र खोल कर नाँचू
चारों वेद अश्रुमय बाँचू

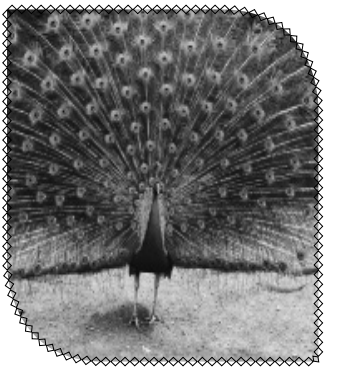

मेघों से गहरा है नाता
सावन का मैं ही हूँ दाता

घहर - घहर जब बदरा आए
मेरे मन को भी ललचाए

नाँचू थिरक - थिरक संभारी
तनिक निहारें मुकुट - बिहारी

कृष्ण - कथा का मैं हूँ अगुआ
सुन लेना कुछ मेरी बबूआ

मेरा मोहक पंख देख कर
कुछ बहेलिए... ताक भयंकर

जंगल, जीव, जमीन बचाओ
मेरे संग आवाज लगाओ

* * *

कूँ - कूँ कंकल

कूँ - कूँ कंकल गाए जोर
जंगल में मच जाए शोर

एक बात की रट है मेरे
बोलो कौन हितैषी मेरे ?

मेरी जनसंख्या है कमतर
पर बोली बेहतर से बेहतर

आम, बेर, अमरूद-बगीचा
सबने अपना प्यार उलीचा



डालों में छिप कर मैं बोलूँ
कोई खोजे, मैं चुप हो लूँ

यूँ ही करती लुक्का - छिप्पी
फ्लाइंग किस की देती पप्पी

हाय! बड़ा नादान जमाना
बोली पर सर्वस्व लुटाना

पर तुम भी तो बोलो मीठा
मत बन जाना पेड़ का रीठा

मधुर सभी कुछ तुम अपनाओ
मधुमेह से मत डर जाओ

केवल चापलूसी मत करना
अपना अहं स्वयं तुम वरना

कितने मीठे बोल की चिड़िया
नहीं निहोरा की मैं पुड़िया

***

राबिन

राबिन ब्लू की करूण - कथा है
विज्ञापन में घोर व्यथा है

मेरे नाम नील है बिकता
डिब्बों से व्यापार में दिखता

उघोगों की खुशी लहर हूँ
पर किसान के लिए रुदन हूँ

यही दुख है मुझको खाता
बाबू को जो रहा सताता



गोरों के कपड़े रोबीले
नहीं चमकते जैसे खीले

जब तक नील नहीं था लगता
सुंदर कपड़ा रहा सिसकता

पर निलहों की हुई क्रांति थी
गाँधी से गोरों को भ्रांति थी

उन्हें समझते दूखा - भूखा
पर सत्याग्रह विजय अनोखा

मानूँ जर्मनी का एहसान
नील रसायन से बची जान

गाँधी जी का शंखनाद था
आजादी का राष्ट्रवाद था

निलहे जब से हुए एक जुट
अंग्रेजों का रोब गया लुट

चंपारण की विजय - बधाई
अंग्रेजों की शामत आई

दिखा स्वराज - सूर्य है निकला
कोहरा-हटा, लगा था झटका

मानो मुक्ति मैंने थी पाई
डिब्बे से व्यापकता आई

❊ ❊ ❊

गिद्ध

जब से मेरी संख्या है कम
विचारकों के नाक में दम

कौन यहाँ पर्यावरण बचाए
हवा - मान को शुद्ध बनाए

बेटी को बचवाने वाले
पढ़ने और पढ़ाने वाले

मोदी जी... मुझको बचवाओ
गिद्ध बचाओ, जोर लगाओ



वरना संतुलन में धोखा
रह जाऐगा केवल खोखा

रंग-रूप में नहीं हूँ प्यारा
माना बदरंगी बेचारा

पर राम - भक्त हूँ प्यारा
श्री राम ने मुझे उबारा

कई बार ऐसा भी है होता
नहीं... समर्थवान भी है खोता

पर अन्याय विरूद्ध में बोलो
डरौ नहीं मुँह अपना खोलो

लोहा लिया अपने बलबूते
रावण के छक्के थे छूटे

चोंच मार कर उसे पछाड़ा
घेर-घेर कर उसे दहाड़ा

पर था खड्गवार अति-भारी
राम-राम बोला नभ - चारी

राम ने क्रिया कर्म था पाला
वो ही है सबका रखवाला

राम-कथा का अमिट पात्र हूँ।
नाम जटायू, सुप्रभात हूँ

❊ ❊ ❊

खंजन

कातिक में जब धान पसारे
घर-आँगन सबके ही द्वारे

जाने कौन खबर दे आए
खंजन आए , नाचे... गाए

धान पक गया डाली - डाली
सोच के खंजन है मतवाली

खंजन है पोथी औ पत्रा
कहाँ-कहाँ देखे से खतरा



दादी पंडित को बुलवाए
फिर देते थे भेद बताए

पूरब में धन ले के आवे
अग्नि कोण पर अग्नि लगावे

उत्तर में पुत्तर की आस
कोण भंडारे भर गई खास

पश्चिम में परदेश पठावे
दक्खिन दुख का मूल नसावे

दादा कहें उठाओ झोला
जाओ अब अहिरन की टोला

दादी काढ़ रही थी नोट
ध्वजा, नारियल, हनुमत - रोट

तुमको कुछ भी नहीं सुहाता
यदि कोई अनिष्ट हो जाता

दादा जी ने हँस कर बोला
बदलो अब कुछ अपना चोला

खंजन - नयन सिया सुकुमारी
राम मेरे पति कहि सयनारी

ग्राम बधू सब करें ठहाका
हमको मिला दरस ये बाँका

इसकी उपमा हो नयनों से
श्वेत - श्याम तिरछी चितवन से

चंचल, कजरीली, मदवाली
कहते काव्य - रसिक स्वपनीली

दादी कहती हो गए बूढ़े
पर रसियापन बड़े नगोड़े

जब देखो साहित्य बताते
उसमें भी शृंगार पढ़ाते

राम-नाम की लो यह माला
जन्म - स्वार्थ करो निराला

बच्चों ने ये नाम धराया
देवानंद और मधुबाला

***

मुर्गी

मुर्गी हुई बहुत बेईमान
देती नहीं सुबह अब बाँग

नौ बजता जब आँखें मलती
बेड टी लेकर... नहीं टहलती

दूर हुई सूरज से जब से
उलटा पढ़े पहाड़ा तब से

कुकडूँ-कूँ जब मन हो बोले
जन-संसद अनुशासन तोड़े

चले, उड़े, खाए, मुस्काए
लेकिन पढ़ने कभी न जाए

जब हम गलती हैं कर जाते
मास्टर जी... मुर्गा बनवाते

राहुल जब थक सा है जाता
कुकडूँ-कूँ कह है कुकड़ाता

सब बच्चे हँसते हैं भारी
छिप कर हँसें-गुरू गिरधारी

चलो हटो अब बस्ता खोलो
याद क्यों नहीं कुछ तो बोलो

मुर्गा देख रहा था छिप कर
दुर्गति बड़ी यहाँ है पढ़ कर

अब मैं पढ़ने कभी न जाऊँ
बस्ते का क्यों बोझ उठाऊँ ?



* * *

उल्लू

बड़ी आँख वाला अध्यापक
देख मुझे सब होते सकपक

लेता हूँ मैं क्लासें नाइट
चेक करता हूँ... रॉन्ग या राइट

जंगल को गुलजार बनाऊँ
सब सोएँ... मैं उड़-उड़ गाऊँ

पेड़ों की ऊँची डाली पर
या सीमा टावर - जाली पर

बैठ बेसुरा कुछ मैं गाऊँ
इसीलिए उल्लू कहलाऊँ

कोई नहीं चाहता मुझको
दे डालीं उपमाएँ सबको

बोलूँ जहाँ उजाड़ है होता
बना हुआ मुहावरा थोंथा

मैं तो लक्ष्मी जी का वाहन
सब करते उनका आवाहन

पर जब तक मैं साथ न होता
उनके चरण कौन है धोता ?

लक्ष्मी को सब रहे चाहते
मेरी छाया से हैं भागते



अथक परिश्रम करे रात-दिन
उसे लक्ष्मी मिलती गिन-गिन

बैठे - बैठे क्या पाओगे ?
खाली हाथ तरस जाओगे

सब सोए, तुम मेहनत करना
उल्लू गुरू कहे सो करना

❊ ❊ ❊

जांघिल

जंघिल जंगल छिप जाओ
ज्यादा शेखी नहीं बताओ
नहीं जानते, कहाँ करौना ?
देखो बिलकुल ही मत गाओ

सबसे पहले दूर तुम रहो
फिर कोई अपनी बात कहो
और पहन लो बोरा - चट्टी
पैनी जैसे नाक कसो



तभी तुम्हें ये नहीं धरेगी
दूर - गली रस्ता पकड़ेगी
तुलसी... हल्दी खाती रहना
एंटीबायटिक धूप सहेगी

मोदी जी,, फरमान हैं लाए-
पाँच मिनट तक थाल बजाए
घंटी - घंटा, शंख ... सरौता
जो भी मिले काम में लाएँ

जंघिल बोला यह बतलाओ
कहाँ से आया तनिक बुझाओ
अगर चीन में उसका है घर
उसको उसके घर पहुँचाओ

चाऊँमीन खिला कर सबको
बना दिया रोगी घर - घर को
रामदेव बाबा जी आओ
चलो मेरा फेंफड़ा फुलाओ

गई - गई अब गई कोरोना
सब जन आओ, तनिक डरोना
नित नूतन सूरज है आता
उसके पावन चरण गहो ना

***

सारस

सारस जी ने खेली होली
दुल्हन लाई नई नवेली
जल में छपर-छपर थे करते
ठेंग दिखाऊँ ... तुझे हवेली

रंग घोल बैठे तलैया
छींटे, फेंके ... पढ़े सवैया
सारस - बो बोली कुछ ऐसे
मैं बरसानी... तुम छुट भैया



दो - चार बूँदें मत डारो
अपने को जल-बीच डुबालो
जैसे उसने मूंड डुबाई
दाब खड़ी... मेहरी मुस्काई

छोड़ - छोड़ सारस चिल्लाया
इस होली ने बहुत सताया
भूल गया मै रंग - अबीरा
सरसी बोली - पढ़ों कबीरा

* * *

गरुड़

मैं सेवक स्वामी नारायण
उनका नाम करूँ पारायण
उड़ा ले चलूँ ... आज्ञा मानूँ
नित्य करूँ हरि का गुण-गायन

रंग सुनहले पंख हमारे
विष्णु सबको सदा सँवारे
पालन-कर्ता ... हैं दुख - हर्ता
जपो उन्हें ही साँझ - सकारे



मेरा उनका साथ अनूठा
सत्य नहीं बन पाता झूठा
डरो सदा, अपकर्म मिटाओ
करें गलत... कहे देव है रूठा

पक्षी में यह पूज्य प्रथम है
उड़ने में गति तेज अगम है
किंतु गज ने जभी पुकारा
कूद पड़े, अति भक्ति सुगम है

जो जन पालन-पोषण करते
सबका ध्यान सदा ही धरते
कभी किसी का अहित न सोचे
विष्णु - पथ अनुगामी रहते

* * *

लाल सारस

ट्रीनीदाद में जन्म हुआ तो
खेलने गई तोबाको
मैं उनका राष्ट्रीय-पक्षी हूँ
लाल रंग, सुर पाखो

झबरीले, चमकीले पंखों
वाला सारस जानो
चोंच बड़ी सी, आँखें काली
बाँसों के पग मानो



भारत से आई थी किर्केट
टीम यहाँ मतवाली
मैंने बोला-सचिन ददा से
ले न चलो चौपाटी

भेलपुरी के खोंमचे वाले
गेट - वे, वेणी वाले
घूम - घूम मुम्बई दिखेगी
फिल्म - सिटी दिलवाले

मिलना बच्चन जी से तो
मिल लेंगे अक्षय जी से
जुहू, सिटी बस, पॉन शाप
हम हैं विकास के पथ पर

सफेद सारस से मेरी
सगवाई भी करवाना
हम दोनों जयमाल करेंगे
देखे सकल जमाना

मैं बोलूँगी - जय टोबाको
वह जय भारत बोलेगा
इसी तरह के प्यार - रोष से
ही कुछ बात बनेगा

ले आए फौरन की बीबी
सारस जी ने हैट लगाया
पंडित जी हँस पड़े देख कर
क्या रंगरूट बनाया

इंटरनेशनल शादी में तो
सज-धज कर आते हैं
पंडित जी - माई डियर बोले
हाथ मिला देते हैं

* * *

पपीहा

करे पपीहा पी - पी - पी
खुश होकर तू जी-जी-जी

सबकी खैर मनाता हूँ
घर में कभी न जाता हूँ

खेतों, बाग - बगीचों में
काव्य... गीत, संदेशों में

रहती भागीदारी है
पर बसंत ऋतु प्यारी है



मधुर-मिलन की हूँ पाती
लाल रंग मेरी थाती

तुमने मेरे घर उजड़ाए
और सिमेंट के महल उठाए

नन्हा सा इक पौध लगा कर
खुश होकर फोटो खिंचवाए

सोचे बहुत काम कर डाले
पर मेरे कुछ पड़ा न पाले

जब तक पौधा वृक्ष बनेगा
अपने पैरों खड़ा रहेगा

शाख, तना, फल, फूल खिलेगा
यही पपीहा तुम्हें मिलेगा?

* * *

तीतर

तीतर लिया मोबाइल मोल
फेसबुकी साथी अनमोल
छोटा सर्किट एक बनाया
उनसे वाट्सप से जुड़ पाया

मेसेज होता ताबड़तोड़
लिख देता कुछ तोड़-मरोड़
लगे लगाने अपना अर्थ
इसी तरह कुछ भया अनर्थ



जी एम लिख कर भेजा बगुला
तीतर समझा आया फगुआ
मुझे बनाया जी एम आज
मैसेज भेजा... मित्र है नाज

डिनर करो ... ढ़ाबा सरदार
खा लेंगे जो हो चटकार
पर अपना हेतु बतलाएँ
हम भी तो कुछ लेते आएँ

तुमने जी एम मुझे बनाया
देखो में फूला न समाया
अरे बावरे! कहे-गुड मार्निंग
नहीं हुई ... मिस्टैक टाइपिंग

तब तक मेसेज दूजा आया
तीतरी के दिल तीर बनाया
किस्सा ये कुछ समझ न आया
सोचा है बहेलिया आया

उसने छलनी किया है सीना
मेरी तितरी बड़ी हसीना
सोचा जंगल छोड़ के भागो
उठो-उठो अब जागो-जागो

उड़ने को जैसे तैयार
कोई बोला ये क्या यार ?
तुमने मेरा चैन चुराया
इसीलिए मेरा दिल आया

संदेशा भी नहीं समझते
फिर क्या घास छीलते रहते ?
मोबाइल की भाषा सीखो
तब जाकर नंबर सब टीपो

नहीं सीख पाए हो थैंक्यू
पर तीतर जी... आई लव यू

***

हरा तीतर

सायोनारा - सायोनारा
मैं जापान देश हूँ प्यारा

भारत मेरा गुरू देश है
उससे दर्शन... बौद्ध वेश है

भारत जाना गर्व मानते
गया, कुशी को तीर्थ जानते

सारनाथ जाना मनभावन
साँची के है शिल्प सुहावन

हमने करुणा है अपनाई
लेकिन कर्म पूजते भाई

मेरे मित्र बड़े सम्मानित
साई जी माकिनो प्रभावित

मिल जाते मणिपुर में अक्सर
जापानी भाषा थी सुंदर

हिंदी बोलें - ज्यों विद्वान
तत्सम शब्दों से पहचान

उनकी बेटी रही सेत्सू
मतलब जिसका मर्यादा तू

वे अक्सर ही रहे बताते
तीतर हरा बहुत हैं भाते



राष्ट्रीय पक्षी जापानी
जूता नहीं पहनता प्रानी

प्रोफेसर की पदवी पाए
पर ना कभी पढ़ाने जाए

सुंदर रुप, छवि है - न्यारी
पंखों पर सावन भी वारी

❊ ❊ ❊

कीवी

छोटी हूँ पर बहुत काम की
बहुत न सुंदर बहुत नाम की

न्यूज़ीलैंड में केवल होती
ज्यों सीपी में होता मोती

राष्ट्रीय - पक्षी का गौरव
बना हुआ है मेरा उद्‌भव

सुनूँ और सूघँना दक्षता
पाँच प्रजाति की है क्षमता



पंख घने, लम्बी हैं चोंच
कीड़ा लाऊँ, रोज ही नोंच

दिन में सोऊँ ... रात में बोलूँ
कीवी - कीवी कर मुँह मैं खोलूँ

नाम वही जो मैंने टेरा
शुतुरमुर्ग जी, भाई मेरा

एक दिन रात में लम्बी बोली
आया बनबिलाव ले झोली

बोला - बहना !, टॉफी ले लो
जन्मदिवस मेरा है खेलो

हँस कर दे दी उसे बधाई
पर मैं हरकत में फिर आई

रात अँधेरी खरपत घेरा
भाई... कैसे बना ये मेरा

लगे दाल में कुछ तो काला
ऊपर अमृत ... भीतर हाला

उसने हँस कर यूँ फरमाया -
भाई होकर जान न पाया ?

मेरा व्रत - मैं एकादशी हूँ
भारत - बंदर , गुरूमुखी हूँ

❊ ❊ ❊

शुतुरमुर्ग

ईश्वर सबको सब नहीं देता
इसी तरह वह धरती सेता

मुझे देख लो शक्ति है बड़ी
पांडव घात में साँस है उखड़ी

पर मैं उड़ने में लाचार
क्या बतलाऊँ? तुमको यार...

इसीलिए संतोष ही करना
जो मिल जाए, खुश है रहना



पक्षी का परिवार हमारा
पर मुझको है आफत भारी

खतरे में दौड़ूँ मैं तेज
पी टी उषा, करे है खेद

पैर बड़े मजबूत हमारे
ज्यों अंगद रावण के द्वारे

गौरव मिला बड़े पक्षी का
प्रहरी और तटी - रक्षी का

पर जब उड़ता देखूँ सबको
मन मलीन कर देता मुझको

पैरों में बस दो हैं उँगलियाँ
पंख दो मीटर, कसी पसलियाँ

मेरा शत्रु बना है वजन
दुबला होना बना है चलन

बाबा रामदेव को जाऊँ
खूब कपालभाँति कर आऊँ

तब ही मेरा वजन घटेगा
किंतु पराठा नहीं चलेगा

कुछ विचित्र है अंग हमारे
तीन पेट ... त्रय नेत्र हमारे

भाता है एकांत प्रवासी
जैसे जोगी रहे उदासी

दाँत नहीं है ... जिनके पास
मेरे जैसे निगलो खास

आँखें बड़ी - बड़ी हैं प्यारी
करता रहता हूँ रखवारी

बाहर रह कर जीवन है कम
जू में शतक लगाऊँ हरदम

पर यह दुनिया है अति प्यारी
गुलामी की रोटी भारी

ज्यादा जी कर क्या कर लूँगा
पिंजरे में बेमौत मरूँगा

अफ्रीका में संख्या ज्यादा
पटना से अब चलूँ नवादा

मुझे नहीं कोई बीमारी
बग्गी को हम खींचे भारी

लम्बा बहुत गला है होता
शत्रु देख कर देता धोखा

तन औ गला बनाऊँ दूरी
यह नाटक भी है मजबूरी

लोग समझते जीव मरा है
मैं सोचूँ - क्या खूब ठगा है

❊ ❊ ❊

नीलांजना

सिर पर सोहे नीली चुनरी
नीली गोटेदार है घघरी
देख - देख सब रहे अचम्भा
यह शकुंतला है या रंभा

तीखे नक्श - नयन हैं मेरे
उठती हूँ मैं बड़े सवेरे
कलशी ले पनघट को जाऊँ
किंगफिशर को बहुत सताऊँ



भरी मटकिया रखूँ, सिर पर
दूजी कमर, फिर चलूँ मटक कर

पाँव पड़े जैसे बंजारन
पतली कमर चली पनिहारन

किंगफिशर जी इश्क दिखाते
राहों में भी ना शरमाते
सबसे अच्छी तुम हो नीला
तुझे देख मैं हुआ नशीला

पिक्चर तुमको एक दिखाऊँ
टिकट जरा एडवांस बनाऊँ
तेरे भीतर झिझक है भारी
इसीलिए हो कम व्यवहारी

आओ हाथ मिलाओ जानी
जनम-जनम की हो पहचानी
पानी से दोनों का नाता
तुम्हें देख कर मैं हूँ आता

तुमने ऐसा जादू डाला
अनिल के दिल जैसे कोईराला
नीला हँसी ... ऐंठ कर बोली
खबरदार जो किए ठठोली ?

मैं हूँ नहीं ताल की मछली
ना तेरे हाथों की तकली
पहले शाकाहारी हो जाओ
फिर मेरा घूँघट उतराओ

***

बटेर

एक दिन दिल्ली चला बटेर
सूट - बूट ... टाई बन शेर
सोचा सीधे संसद जाए
अपना जो मंतव्य सुनाए

मोदी जी से बात करेंगे
वे हँस मुख हैं ... खूब सुनेंगे
नारा पर्यावरण बचाओ
पर ज्यादा मत हमें सताओ



शौक हो गया ... जंगल आना
पहुँचे भीड़ ... हाथ लिऐ खाना
जंगल को मैदान बनाया
दूर कहीं ... जंगल बच पाया

जंगल - प्रेमी वहाँ पहुँचते
शोर - शराबा खूब हैं करते
इससे है खड़मंडल भारी
बाधाएँ आती हैं सारी

मेरी प्राइवेसी क्या होगी
इसी तरह सब हमने खो दी
जिसे देख लो फोटो खींचे
अपना - अपना प्यार उलीचे

कंधे पर एक बड़ा यंत्र धर
इधर - उधर घूमें हैं लक्ष्य कर
कहें वीडियो हम हैं बनाते
पर हम तनिक नहीं सुख पाते

आवा - जाही इनकी ज्यादा
तोड़ रही वन की मर्यादा
हमें दे रहे पिज्जा - बर्गर
क्या जीएँगे, जीवित मर कर ?

मोबाइल से हमें रिझाते
पर हम छिप - छिप हैं इतराते
प्लास्टिक .... रैपर नहीं उठाते
गंदा मेरा घर कर जाते

हम सब करते रोज मंत्रणा
क्यों सह लेंगे - इतनी यंत्रणा ?
मोदी जी..., कानून बना दें
मेरा भी बीमा करवा दें

जंगल है तो जीव दिखें हैं
जो कुछ भी दो - चार बचे हैं

***

फुलचूसी

मैं चिड़ियों में छोटी गुड़िया
जैसे घर में होती बिटिया
बेटी देख नयन भर आता
हाय विधाता.... इसे बनाता

जिस दिन से घर में है आई
आते ही हो गयी पराई
देख इसे फटती है छाती
इस घर आती, उस घर जाती



सीता, सावित्री, अनुसुईया
सबकी छूटी माता - गुईया
एक समय ऐसा भी आया
नजरों से था इसे गिराया

हत्या होती रही भ्रूण की
कोख-अजन्मा, बाण - द्रोण की
जनसंख्या संतुलन बिगड़ता
मिलता नहीं ब्याह का न्यौता

अब क्या होगा ? बहू न होगी?
पुत्र - प्राप्ति का यह फल दोगी?
माथा पीट रही माताए
दो माँ वैष्णव, गोद खिलाए

तब तक यह आदेश भी आया
मोदी जी ने था फरमाया
बेटी को पहले बचवाओ
और उन्हें फिर खूब पढ़ाओ

घर - घर होने लगी बधाई
कन्या आई... लक्ष्मी आई
मोदी जी को पुण्य लगेगा
अश्वमेध से अधिक फलेगा

अब मेरा फीचर भी समझो
जैविक - रचना भी तो बूझो
छोटी - सूई चोंचो वाली
हल्की, कम ही दिखने वाली

जिन फूलों का अगम - परागण
उनको मेरा प्यार - समर्पण
मैं उनको बीजित कर जाती
फूलचूसी मैं हूँ कहलाती

***

फ्लामिंगो

राजहंस परिवार हमारा
पक्षी में मैं राजदुलारा

मूल रूप यूरोप - निवासी
पर भारत का सदा उपासी

कई प्रजाति मेरी है जानो
पंखों पर है जान ये मानो

बहुत सुनहरे लाल - गुलाबी
पंख हमारे यौवन - ख्वाबी

चिल्का झील मुझे है प्यारा
जो आता... जाता दोबारा

मुझे भी अच्छा लगता आना
दे जाते ... मूँगफली व दाना

मैं भी उड़- उड़ कर हूँ खाता
करतब नए - नए दिखलाता

पर रेपर झिल्ली जो फेंके
देख - देख कर मन है झेंपे

हवा, धरा, जल दूषित होते
जाने हम क्या हैं खोते ?

ऐसा फिर मत करना भाई
कौन बनेगा ... फिर विषपाई ?



एक टाँग पर ध्यान लगाऊँ
पाँच घंटे तक हिलूँ न गाऊँ ?

सूर्य - निवेदन हूँ मैं करता
जो मुझमें अनुशासन भरता

है उड़ान में बड़ी भव्यता
इंद्रलोक जैसी है रम्यता

केवल तीन पंख हूँ भरता
फिर फ्लाइट सा मैं हूँ उड़ता

गर्दन ... पैर ... रूचिर स्तंभें
जैसे अमिताभ जी लम्बे

भोजन करता रोके साँस
प्राणायाम विधि यह खास

ताड़ासन ... गरूणासन करते
फ्लामिंगो से क्यों हो डरते ?

जल के जीव - जंतु हैं भोजन
बथुआ ... लौकी नहीं प्रयोजन

लाल - गुलाबी क्यों हूँ जानो ?
खाऊँ कैरोटनाइट मानों

यह सब मुझको लाल बनाता
लाल बहुत कुछ है कह जाता

यह होता गाजर में प्यारे
खा कर होओ लाल - दुलारे

जोड़ी में रहना है भाता
चोंच मिला कर दिल बन जाता

नकली दिल ना कभी बनाऊँ
पेड़ों पर मैं क्यों दर्शाऊँ ?

सचमुच प्रेम जहाँ है होता
कुछ पाकर.. सब कुछ है खोता

वह विज्ञापन नहीं बनाता
आई लव यू - ना चिल्लाता

इसमें जो डूबे ना बोले
जान हथेली पर ले तौले

मीरा... पंत ... कबीरा गाए
कहे मगर... बतला ना पाए

❊ ❊ ❊

बत्तख माटा

बत्तख चली मटकती चाल
थुलमुल पेट, गुलाबी गाल

पीली चोंच, श्वेत परिधान
नहीं कोई थोपी पहचान

जल में तैरे जैसे द्वीप
आँखों को दे सुखद प्रतीत

सरोवरों की हैं आँखें
लहरों की कविता बाँचे

जब ये चले संग परिवार
मेले चली ... गुजरिया चार

चित्त शांत ... सुरभित मुस्कान
क्रोध, ईर्ष्या नहीं पहचान

बच्चे जब भी चित्र बनाते
बत्तख में हैं रंग भराते

सुबह सरस्वती से है नाता
नीरवता है इसको भाता

ताल - तलैया है चमकाई
इसे सुहाती जल की काई

पंजे इसके बड़े लचीले
सिकुड़े ... मोड़े छवि छबीले

गोदी में उसको बैठाए
सेल्फी लूँगी ये मन आए

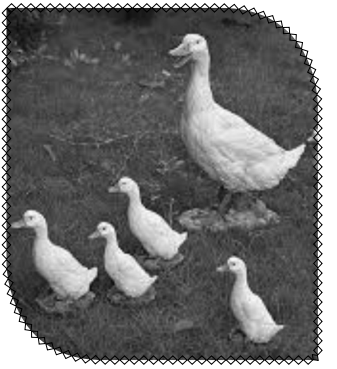

***

पीली बुलबुल

पीली बुलबुल बड़ी गुलाम
रटती रहती जै श्री राम
बात पुरानी, ब्रिटिश - काल
लेकर चले श्रमिक सूरीनाम

दीना बाबा, बहुत ही प्यारे
खेती, कविता, गीत थे न्यारे
उनको भी ले गया दिवान
लेकर श्री राम का नाम



वे मेरा जोड़ा था पाले
जीते थे हम उसी हवाले
जब वे धरे रामायण माथ
हम भी हुए वहीं मतवाले

उनके बिन हम क्या रह पाते
जभी खिलाते ... हम थे खाते
जब कुआँ पर रहे नहाते
खुश हो ... दोनों रहते गाते

नाम हमारा राम औ सीता
पढ़ते रहते रोज ही गीता
कहते नाम - तेरा है तारी
कभी सुनेंगे ... जगत - पुनीता

जिला था बक्सर और बिहार
विश्वामित्र श्रृषि का द्वार
राम यहीं ताड़का थे मारे
श्रृषियों का सादर - सत्कार

दीना बाबा चले विदेश
नहीं पता था, कौन सा देश ?
सूरीनाम श्रीराम बताया
बोले प्रभु का है आदेश

हम भी संग में उड़ते - जाते
जब खाते ... खाते - मुस्काते
इसी तरह पहुँचे कलकत्ता
वहाँ मिठाई, पान चबाते

भोजपुरी थी मेरी भाषा
प्राणों से प्यारी यह माता
नहीं किसी में भेद सिखाती
सारा जग अपना है भ्राता

अइनी, गईनी, गीतिया गाई
भौजी, तिरिया, बहना, भाई

बाबा, पोथी, नाऊ बारी
मधुर शब्द मिसरी की नाई

जैसे बैठे बड़े जहाज
पता नहीं, बेंचे गए आज
गिरमिटिहा कागज थे पाए
तीतर को ले मारा बाज

वे समुद्र में चले निरंतर
हम उड़ते बादल से ऊपर
कई दिनों की यात्रा पूरी
देख चकित हो गए परस्पर

बाबा बोले - सोनवा आई !
लेकिन तुम क्यों यह दुख पाई
नहीं, मुझे सुख नहीं चाहिए
तेरे संग मैं हुई पराई

सीता-राम हुए वन -वासी
दीना बाबा शिविर - निवासी
विपत्तियों ने डाला डेरा
पता चला हम हुए प्रवासी

सोनवा जोड़ा बसे पेड़ पर
बाबा डँट कर रहे खेत पर
दोनों में संवाद बना था
याद करें, चुगना वो मेंड पर

मैं उनको सब भेद बताती
भारत माँ की याद सताती
पर भारत था नया बसाना
महावीर की बाँचें पाती

सूरीनाम में जै श्री राम
गूँज रहा कीर्तन अभिराम
सतुआ, लीटी - चोखा, साग
और परिश्रम से हो काम

मेरा भी परिवार बढ़ गया
एक अवध का रूप था नया
मैं राष्ट्रीय - पक्षी कहलाया
पक्षी - मानव कथा थी दया

पीली बुलबुल बन इतराई
आँखें मेरी भर - भर आई
स्वागत में है जी भर आया
आओ भारतवंशी भाई !

***

हरा कबूतर

हरा कबूतर, मिला जल महल।
सुंदर.. सभ्य... सलोना !
बेंच रहा था, बाँस - बसौटा
ले लो... साहब - लोना !

बाँस टोकरी, बाँस का छन्ना
बाली, साबुनदानी
क्लिप, गुलदस्ता, ट्रे, कोस्टल
फूल और फलदानी।



बहुत देर से बैठा हूँ मैं
बोहनी नहीं हुई है,
आते - जाते टूरिस्टों से
महफिल सजी हुई है।

सबको मेटल,, धातु, रत्न से
बढ़ता रहा लगाव।
किंतु बाँस की महिमा न्यारी
देखो तनिक प्रभाव।

यह चिड़ियों का झूला-घर है
बूढों का है बेटा
वेणु - बाँसुरी, कृष्ण - मुरारी
अंत समय सब लेटा।

बाँस पालना, सोफा, ड्रेसिंग टेबल
भी ले सकते
बाँस - कलाओं के खातिर सम्मान
यहाँ कुछ रखते

जड़ से हमने जीवन की आकृतियाँ
कई निकालीं
है प्रसिद्ध जो सकल विश्व में
हमने यहाँ सम्भालीं।

तब तक एक धनाड्य सेठ के
जाने क्या मन आया।
दे दो सारे, ये लो पैसे,
कह कर पिंड छुड़ाया।

हरा कबूतर बोला -
मुझमें भरी बहुत खुद्दारी
उठा ले पैसा, फूट यहाँ से
बनना नहीं मदारी।

ये हे कला - मात शारदे !
का अविरल उपहार।
इसको भी क्या खरीद लोगे ?
पैसे में दो - चार ।

***

लाल कबूतर

लाल कबूतर ने सिक्किम में
सम्मेलन करवाया।
कवियों को भी बहुत भाव से
गंगटोक बुलवाया।

शहर देख लोगों ने सोचा!
क्या यह इंद्रपुरी हैं?
उपर - नीचे ... नीचे - उपर
फूलों की नगरी है।



हरी खिड़कियाँ... हरी दीवारें
हरे बिछौने गद्दे।
राज्यों में है शान अनूठा
उठे यही थे मुद्दे।

तोता जी ने कोरौना पर
रचना पढ़ा... नवाजा।
और कोयलिया बोली -- प्रीतम
गंगटोक में आ जा।

कौआ जी का व्यंग्य और
तीतर जी के चौबंदे।
मोर बने अध्यक्ष, और भुजंगी
- संचालन के झंडे।

मोरनी जब शृंगार सुनाई
रोए पर्वत - वासी।
उलटा कैसे हुआ, चौक पर बोले।
बाज बिलासी।

वीर रसों की ध्वजा संभाले
गरूण हुए वाचाल।
शत्रु - दल पर टूट रहे थे
चेतक के भूचाल।

फूहड़ - रस ले गिद्ध पधारा
छी-छी हुई पुकारें।
कहाँ गए मैना - कलंगी,
आकर जरा सँवारें।

गजल सुनाई दी कानों में
बुलबुल दर्द दीवाना।
वाह ! वाह ! फिर शेर मुकर्रर
कहता रहा जमाना।

पपीहा के विरह - गीत के
उपमा मिले अनूठे।
पिया गए परदेश, अभी तक
लौट नहीं हैं - रूठे।

सरस्वती - वंदना अंत में,
उल्लू जी ने गाया।
तब जाकर श्री नीलकंठ ने
मंचित दीप जलाया।

कवियों की अब बाजारी में
स्वेटर, फूल मसाला।
घर की सजावटें थीं शामिल
कपड़े सिल्कन वाला।

सभी कवि ने शपथ था लिया
चाईना नहीं खरीदो।
यहाँ थोक बाजार उसी का
बिलकुल नहीं पसीजो

बुद्ध देव के मठ - मंदिर में
जाकर शीश नवाओ
हनुमान की देख टेकड़ी,
हृदय तनिक जुड़ाओ।

नेपाली - बाजार यहाँ का,
हिंदूधारी गढ़ है।
बहुओं को लेते जाना,
सिंदूर बहुत सुघढ़ है।

दिन तीसरे हुआ अचानक, सब
कवियों फिर आओ।
नहीं हुआ आभार उसी दिन
फुदकी को बुलवाओ।

और चौथवें दिन जब,
जाने की थी सब तैयारी।
बत्तख जी तब हार लिए थे
स्वागत की लाचारी

यह कैसा अनुपम सम्मेलन,
सब कुछ उल्टा-पुल्टा।
तावे पर सब्जी हैं छौंके,
दाल चलाऐं चिमटा।

लाल कबूतर राज्य पक्षी ने,
सबको, तय राशि दे डाला।
फिर सब आना मेरी कुटिया
रिश्ता बना निराला

***

चितकबरी बत्तख

मैं आसामी नदिया गोल।
चलती रहती हूँ लट खोल।
ब्रह्मपुत्र मेरे संरक्षक।
गुवाहाटी की पावन अक्षत।

पर्वत, नदी, झील, औ झरना।
फूल - पात,, वन बीच विचरना।
फैंसी बाजारी - हूँ गुड़िया।
पलटनपुर की सजी, गुजरिया।

सीटी बस में करूँ सवारी।
असमी, देशी औ मारवाड़ी।
माँ कामाख्या की हूँ, दासी।
सकल विश्व में पूज्य सुहासी।



कितने ही संग्राम देख कर।
आंदोलन में सेज छोड़ कर।
भारत की मैं आन - शान हूँ।
मस्त एक बनारसी पान हूँ।

दिसपुरी मेखला पहनती।
चादर खोंस ... बहुत मैं सजती।
जूड़ा के आभूषण सारे।
और नयन मेरे कजरारे।

बिंदी लाल, गले में कंठी।
गर्दन बहुत लचीली ... शंखी।
बिहू गान पर जब मैं थिरकूँ।
प्रियतम में परमेश्वर निरखूँ।

धान खेत-खलिहान बसा कर।
पीठा, दही, मछरिया खाकर।
सारी रात कमर लचकाऊँ।
अभिनय से मैं बहुत रिझाऊँ।

जब समूह में,, झूमूँ गाऊँ।
बैठ एकांत बहुत मुस्काऊँ।
हाट.. नामघर.. मंदिर.. मॉल।
एअरपोर्ट पर करूँ धमाल।

पान - सुपारी का है न्यौता।
इनसे खुश हों देवी - देवता।
एक बार आसाम तो आओ।
और यहीं होकर रह जाओ।

❊ ❊ ❊

स्वर्ण - मुख वाली मैना

मैं हूँ सोन बहू, प्रीतम-आओ गीत सुनाई दो।
घूँघट में हूँ... छिपी हुई, मुझको मुँह दिखाई दो।

मैं अमेरिका की बेटी, जयपुर में ससुराल मेरी।
इतनी सुंदर आँख प्रिये! घायल हुए, दवाई लो।

पीली चोंच में नथिया, बोरला लाओ मेवाड़ी।
चुनरी जोधपुरी पहनी, बीकानेरी है चुलड़ो।

अब गजरा कोटा वाला, पायल पहँनू उदयपुरी।
अजमेरी पल्लो, सतरंगी, चूनर मेरो आमेरी



भीलवाड़ा के ठुमके-कंगन, डूँगरपुर रो गोट जरी।
पिया हमारे, पँगड़ी वारे, गुजरानी चित्तौड़गरी।

करौली के मीणा भाई, झुनझुनु वाले लँहगा रे।
नैन से भी मत छूना मुझको पड़ जाऐगा, मँहगा रे।

राजपुतानी, वंश - सिसौदी, मुखड़ा कोई कोनी देख्यो।
आसामी मेम की चेलन, मिलना हो तो आ जा जी।

मीरा, राणा, चेतक की मैं आन, बान, हूँ मर्यादा।
झालवाड़ में देवर म्हारो, ननण ब्याही ब्यावरा।

लाज लगे है, आँख उठे ना, सात गजी घूँघट मेरी।
काशी वाले पंडत जी ने, मंत्र पढ़्यों, होई फेरी।

ऐसी ब्याह भयो थो म्हारो, ओबामा-मोदी आएँ।
ऐ सैया जी! बात करो ना, बोलो दिल्ली कब जाएँ।

***

रोड रनर

मेरा नाम सुधारो जी।
हिंदी में मुझे पुकारो जी।
किसकी मोनोपोली है।
क्यों करा ठिठोली है ?

दुनिया में इतनी भाषा।
अंग्रेजी फेंके पासा।
पंडित जी उठ कर बोले।
पथ - गामी पाखी भोले।



हिंदी मैम तुरत आई।
राहधरी तुम कहलायीं।
मराठी काकू तैयार।
रस्तया बाई ! साँगू प्यार।

बंग्ला में सत्कार मिला।
पथरंजनि से नाम खिला।
मेवाड़ी में राह - गुजरिया।
गुजराती - है पंथ - प्रिया।

उर्दू बोली राह - गुजारिश।
असमिया - राही मजलिश।
भोजपुरी में डगर - सुनयना।
अवधी में रहिया - बयना।

ब्रज - रसिया ने तभी पुकारा।
छत्तीसगढ़ी, रहिया बरजोर।
मगही पान चबाई चिरैया।
तब निकला है - बाटधरैया।

मैथिल कहे - कहीं मत जाओ
बाट - जोहैया, कहियो छो।
रोड़ रनर तब घबरा बोली।
कंफ्युजन में मुँह थी खोली।

इतनी विविध, मधुर मनभावना।
भाषाओं का रूप सुहावन।
चाहे सभी देश अब छूटे।
सभी बड़े हैं रंग - रंगूटे।

गंगा गीता और गायत्री
छूटे नहीं इनकी मैत्रेयी।

***

चितकबरा कौआ

चितकबरा कौआ खुश था अब मुझे बारात में जाना।
नये वस्त्र में सज करके, टाई भी लगवाना।

पहन – ओढ़ कर खड़ा हुआ जब, पत्नी हुई दीवानी।
नजर और उतरा भी लेना, लगते मिर्जा जानी।



बहुत ऐंठ कर, शाल फेंक कर, बोला सेल्फी लेंगे।
आओ जी, सुंदर सभी सहेली फिर कुल्फी भी देंगे।

जैसे फोटो लेने को वह, व्याकुलता दिखलाया।
सूप तभी गिर गया सूट पर, तोबा बहुत मचाया।

वेटर जी स्टार्टर लाओ, कोलड्रिंक भी लाना।
बैठ लतीफे लगा काढ़ने... कैसा हुआ जमाना।।

खाए-पीए, धूम मचा कर, कर ली सबसे यारी।
पर बारात नहीं वह थी, जिसमें उनको रात बितानी।

गजब हो गया, अब क्या होगा, सोचो दिलवर जानी।
बेगानी शादी अब्दुल्ला, कैसे किया नादानी?

***

पीले बिल वाली कोयल

मैं उत्तर अमेरिका वाली, कोयल बहुत निराली।
जितने भी प्रेसिडेट हुए हैं... सबको लगूँ मतवाली।।

अमरीका के सभी दिवाने.... स्तर बहुत अनूठा।
जिसको देखो यहाँ पहुँच कर... ग्रीन कार्ड का भूखा।

जीवन-स्तर, रोग-चिकित्सा कोई नहीं है शानी।
पर मुझको है नहीं मिली... इक मीरा सी दीवानी।।

उसके सिर की मधुर बाँसुरी अपनाना है मुझको।
क्या उसका दीवानापन था... कृष्ण ने पूजा जिसको।



और एक है काशी नगरी तीन लोक से न्यारी।
भोले बाबा की बन जाऊँ, मैं भी चेलन प्यारी।

पान का बीड़ा, साड़ी बनारस, बुश जी मुझे मँगा दो।
ठुमरी, सोहर, कजरी, पचरा, लोकगीत सिखला दो।

अरे ! अवध की शाम न भूलो, कत्थक वाली रातें।
राम की नगरी, बोध-गया सारे मुझको दिखला दो।

मुम्बई वॉलीवुड की सीटी, हीरो का हब भारी।
मेरी अंतिम चाह, बनूँ बच्चन की फैन हजारी।

क्या कुदरत ने अभिनय सौंपा,क्या आवाज करिश्मा ?
एक फिल्म कर लूँ, उनके संग, ब्लैक लगा के चश्मा।

तब तक मिस्टर कोयल आए - गुड सवेरा - मैडम!
क्या अब तक भी टूट न पाया भारत जाने का सरगम।

अरे, उठ गये, तो पहले-एक बेड टी तो पिलवाओ।
भारत चलना है तो, पहले पत्नी-धर्म निभाओ।

❊ ❊ ❊

मुखुंड

ऐ बाबूजी ! सुनो डरो मत, काश्मीर में आओ।
पग-पग पर ही स्वर्ग मिलेगा, मन चाहे बस जाओ।

अब वो पहले वाली बातें, नहीं दीखने वाली।
अमन - सृजन का योग लगा है, खूब बजाओ ताली।

पर्वत है - शिवलिंगो जैसे... नदियाँ नार - नवेली।
लकड़ी वाले भी घर लगते, जैसे कोई हवेली।।

जम्मू को जन्नत ही जानों... मंदिर सजे निराले।
वैष्णव माँ की कृपा निराली, जग-भर हैं मतवाले।



राम बन, टेनल रोबीला, झील-झरन है - सजना।
रोक - रोक कर सेल्फी लेना, पेड़ों का है गहना।

चीड़ - चिनारों के यौवन पर फिदा अप्सरा - कन्या।
सेवों के बागीचों में... राधा-कान्हा का मिलना।

काजू, पिस्ता, बादामों के बाग बड़े झबरीले।
किर्केट के बल्लों की लकड़ी, हाय! बड़े कजरीले।

लिए काँगड़ी, कोई युवती, हँसते हुए दिखेगी।
पाँचों पचरंगी पहने... दिलखुश देवी उतरेगी।

है पहाड़ की शाही-शौकत, रोब बनी ठकुराई।
नदियों में नदियाँ ही आकर, कितनी बार नहाई??

डलझील के चले शिकारा, करते प्रणय - निवेदन।
कजरारी आँखों से जैसे, इकरारी - स्पंदन।

बहुत कहाँ तक बात बढ़ाऊँ, देखो पिक्चर जाओ।
काश्मीर की कली देख लो, कभी भी नहीं अघाओ।

शर्मीला टैगोर बनूँ मैं, तुम शम्मी बन जाना।
इशारों-इशारों वाला मिल कर गाए गाना।

क्या झुमका था, कैसी चोटी, गजब गाल के गड्ढे।
देखूँ, तुम तो गिरे नहीं हो, ओ दिलवर, ओ रब्बे।।

❊ ❊ ❊

मैंग्रोव कोयल

मैंग्रोव कोयल के दिन फिर आए आए हैं बरसाती।
मीठे-मीठे बोल सुना कर सबको है भरमाती।

आम, पपीता, लीची, कटहल में दिल रहता भारी।
तरबूजा, खरबूजा खाना... मजबूरी लाचारी।।

कहाँ-कहाँ से लाऊँ इनके लिए फलों की क्यारी?
पता नहीं है, फल के भी हैं, बाजार गर्म बीमारी।

मैंने कहा - चलो समोसे खाते हैं सुकुमारी।
पर उसने तो बात पलट दी, तुम चटोर - भिखारी।



तुम कहते हो-एकादशी हूँ, पूछो-प्याज चलेगा.?
मैं बोलूँ - मछली रानी का प्रियतम भोग लगेगा??

गजब विप्र हो - खाने पर ही रहता ध्यान तुम्हारा।
तोंद निकलती चली आ रही, फीगर बना बेचारा।

खा कर दो पग टहल न पाते, सूगर फिर धर लेगा।
पैंक्रियाज को भरी जवानी में ही, ले डूबेगा।

वजन बढ़ रहा,, घी से फिर परहेज न कोई तुमको।
थुलथुल हो, कोलेस्ट्रल की बढ़त की चिंता मुझको।

हरिद्वार जाओ... योग के नित्य नए गुल सीखो।
तभी पा सकोगे तुम मेरी जैसी कुसुम कली को।।

***

नाईजीरिया के ताज वाले बगुला

गजब सलोना रूप है तेरा, इंद्रदेव की रानी।
पश्मीना की शालों वाले, पंखों पर इतरानी।

कुछ नीले से, कुछ हैं काले, जैसे नीलकमलनी।
आँखें हैं - मधुबाला जैसी, गर्दन जैसे नलिनी।।

चोंच देख कर तोता रोया, मेरे से भी सुंदर।
हाय! कहाँ से लाऊँ इतने मोहक लगे भयंकर।

पैरों की तो बात निराली, ज्यों अक्षर एकादश।
झील, ताल वाली जगहों पर, मिलती रहूँ अचानक।



पँखों पर हैं - बहुत लुभाए, मोर-मुकुट गिरधारी।
आए थे जब नाइजीरिया... मैंने थाल सँवारी।

भारत में इस के बच्चे पढ़ने गए निरंतर।
लौट वहाँ से आते ठग कर... हारा हुआ सिकंदर।

भारत के बगुला जी से, मैत्री मेरी करवा दें।
उनसे यदि शादी हो जाए, भाग्य मेरे जगवा दें।

उनके जैसे रंगों और मेरे पंखों मोहित।
मेरे आगे की पीढ़ी पर, लट्टू होगें जाए चित।

मैं बन जाऊँ - नाइजीरिया दुल्हन शादी वाली।
शर्त यही है - साड़ी लाना, शिल्कन वाली खादी।।

❊ ❊ ❊

साइबेरियन गुल

रूस बहुत ही श्रेष्ठ देश है।
लंबा - चौड़ा है - विस्तार।

भारत के उत्तर में स्थित।
ज्ञान और विज्ञान अपार।

लोग यहाँ जाने को आतुर।
सुंदर - संस्कृति अपरंपार।

गोरे - गोरे लोग यहाँ के।
नैन - नक्श कमनीय अपार।



लगता कोई परी उतरी है।
इस धरती पर है सुकुमार।

गालों पर रक्तिम अरूणाई।
नाक लगे रंभा - अभिसार।

मूर्ति लगे कहूँ मैं कैसे।
नहिं सजीवता का संचार।

अकल्पनीय लगती है संध्या।
कभी कल्पना ही साकार।

रूसी सदा कर्म ही पूजते।
कर्म कृष्ण ज्यों रहे उचार।

केत, एपेंक, चुकामीर सब।
आदिवासी हैं स्वीकार।

तापमान का नहीं पूछना।
थर-थर काँपोगे - सरकार।

सबसे ठंडा यह भूमंडल।
साइबेरियन समझो यार।

काली मिट्टी बहुत उपज की।
किंतु सर्द से है लाचार।

उन्नीसवीं सदी तक पिछड़ा
रहा यही भूमध्य अपार।

धातु, कोयला, अन्य पदार्थों।
से सम्पन्न जगत - व्यापार।

उसी देश की रहने वाली।
पाखी हूँ - मैं भद्र - विचार।

पर जब तापमान डरवाता।
भारत में आगमन - उदार।

आश्रय देतीं गंगा - मैया।
है विराट उनका परिवार।

काशी कभी, प्रयाग, हरिद्वार।
यहीं नहाऊँ छप - छप मार।

लोग यहाँ के परम दयालु।
भोजन लाते रूचि अनुसार।

हे ईश्वर! तुम प्रति वर्ष।
करना शीत - कहर का वार।

मैं भारत माता के चरणों में।
नित्य - वंदन का भिनसार

लेनिन, गोर्की और पुतिन भी
सीखे इसी भूमि से प्यार।

❊ ❊ ❊

जाजुराना

जाजुराना जाजुराना।
सुंदरता का है खजाना।

हिमाचल की शोभा - खान
तू अद्भुत मोहक - मुस्कान।

सराहन में केंद्र है तेरा।
करता वहीं वृद्धि - बसेरा।



आबोहवा रास है आई।
घूम रहा जोड़ा शरमाई।

जंगल में घूँमेगा फौजी।
तभी कहाएगा मन मौजी।

नस्ल कहीं ये खो ना जाए।
हमने बहुत प्रयास लगाए।

चुनरीली बूँटी सी पाँखें।
चटक चरपरी मिर्ची आँखें।

इतनी पावन भूमि का पाखी।
पार्वती माँ की शुभ पाती।

* * *

बौना किंगफिशर

बौना किंगफिशर है नाम।
फिश मेरे कवि का उपनाम।

मैं हूँ कालीदास का चेला।
प्रकृति का संगी अलबेला।

भोर भये मैं पढ़ूँ ऋचाएँ।
वेद - पाठ मन रहूँ बसाए।

किंतु पूजा करके आऊँ।
आते ही मैं नियत डोलाऊँ।



कहता रानी - मछली लाओ
कुछ प्रसाद तो मुझे खवाओ

जब वो दाल-भात ले आती।
मैं मुस्काता अरहर - पाती।

ऑफर देता भुट्टा खाओ।
लाओ नया दुप्पट्टा लाओ।

दोनों मिल उड़ जाते पूरब।
देखें इक दूजे की सूरत।

छोटा हूँ पर बहुत सजीला।
हेमा जी का हूँ रंगरीला।

मथुरा में मतदान था भारी
मैं होता सबका आभारी।

चोंच हमारी - लिपस्टिक है
सारी दुनिया में यह हिट है।

आँखें जैसे सोलह साली
अभी प्रेमिका... ना घर वाली

❊ ❊ ❊

कोकाबुर्रा

मैं आस्ट्रेलियन कोकाबुर्रा।
रूप अजब है - उस पर तुर्रा।

तुर्रा ये कि भारत जाऊँ।
एक बहुरिया लेकर आऊँ।

जो हो घूँघट, मेंहदी वाली।
चूड़ी, बिंदिया, नथनी वाली।



जब मैं आऊँ खूब लजाए
मुझे दीखते ही छिप जाए।

कभी नहीं फरमाइश करती।
मेरी हर च्वाइस पर मरती।

ऐसी है भारत की नारी।
ज्यों सीता, गंगा अवतारी।

बहुत खूब है कोकाबुर्रा।
तुम दुर्लभ कश्मीरी दर्रा।

रानी बहुत लजीली चाही।
पर तुम राम बनो यह भायी ?

* * *

सोना तीतर

चीन, मध्य एशिया निवास।
चिड़ियों में मैं परी हूँ खास।

जितनी कोई सोचे प्यारे।
ललित कल्पना पँख - पसारे

मधुर - मधुर यादों में खोए।
याद करें औ नैन भिगोए।



मैं उससे भी अग्र सजीला।
स्वप्निल रातों सा शर्मीला।

करो कल्पना जितना सोचो।
मैं उससे नाजुक हूँ- अलगोचों।

ईश्वर ने जब प्रेम उतारा।
हुआ छंदमय अंगीकारा।

मोहित हो गया सृजनहारा।
हाय!! देव, मैं क या उतराया?

देव कहे ... नहीं कोई बात।
यह मेरी इच्छा है भ्रात।

मादक रंगों की शहनाई।
है बसंत ने आज बजाई।

पीला - रंग माथ सँवराया।
गर्दन पर धारी सजवाया।

जैसे नेकलेस हो पहनाई।
फेंक तूलिका गले लगाई।

लाल रंग की सजी घँघरिया।
नाचे बादर - बीच मोरनिया।

पीछे पँखों के पारायण।
शब्द नहीं हैं... हे नारायण !

पैर लगे उर्दू की नज्में।
टूट रही हैं प्रणयी - रश्में।

सोना तीतर - तुम मदनयनी।
कभी तो मिलो, ओ मृगनयनी !

⁂

सुनहरी तीतर

प्यार की दुस्तर अगम कहानी
एक था राजा एक थी रानी।

कभी शुरू हो, राजमहल से
और कभी नदिया निर्मल से

कभी गरीबी बीच है खिलती।
कभी फटे कपड़े में मिलती।

कहीं हैं राजकुवँर - मलहोरिन।
और कही महुआ घटवारिन।



राधा - कृष्ण न रहे अछूते।
ये प्रसंग हैं बड़े अनूठे।

तोता - मैना, और अमोला।
सुन-सुन करूणा से मन डोला।

नल-दम्यंती मत्स्य-कथानक।
शकुंतला - दुष्यंत प्रणय - रत।

सबको ग्रसा विचित्र शाप ने।
विरह ही मिला प्रेम - हाथ में।

हे विधना! कैसी यह रेखा।
विरह मिला, सुभाग्य न देखा।

मिला कहीं पर देश - निकाला
चुन दीवारों में सुख पाला

कहीं बेच की सौदे - बाजी
काजी - पंडित कहीं है हॉबी।

सच कहते समीकरण गलत है।
परंपरा फिर भी अक्षत है।

इस पर जात-धर्म नहीं हॉबी।
सारी पाबंदें - कहें ना जी ?

एक ओर है मिलन-पिपासा।
भाग्य प्रेम की लिखी निराशा।

इनके बीच पनपता है यह।
जीवन के हर दुख-सुख को गह

नैन - पाठशाला में जाए।
कोशिश करे, लौट ना पाए।

विद्यालय - संक्रमण है इसका।
सुने - सुनाऐ किसका किस्सा।

राजस्थान में ढोला - मारू।
जीवित है मरूधर में चारू।

रोज तड़पते लोग बताते ?
क्या मर कर भी चैन न पाते।

आरावली पहाड़ सिसकते।
रेतीले कण उड़-उड़ कहते।

ढ़ोला रुको-मिलन है आई।
मारू का भ्रम, पड़ा दिखाई।

क्षितिज-मिलन की भ्रम प्रत्याशा
प्रेम न देना... यहाँ विधाता।

सुनहरा तीतर यह सोचे।
सोनी तितरी कभी न बिछड़े।

प्यार हमारा अमर रहेगा।
मिले न कुछ, ये सच न मरेगा।

❊ ❊ ❊

नीलम तीतर

हिमालयन है वंश हमारा।
हम भारत के हैं अनुयायी।
हमने देखे द्वापर सतयुग,
राम - कथा मैंने है गायी।

महाभारत की मात द्रौपदी।
और कृष्ण जैसा हो भाई।
इनके लिए आँख है तरसी,
कभी करूँ इनकी अगुवाई।



मेरे मोहक रंग नील पर।
वारी जाते लोग निहारी।
पर मेरी भी क्या सुंदरता?
जिसे सजाऐ नहिं गिरधारी।

नहीं जटायु बन पाया मैं।
राम-चरण का मैं अधिकारी।
शुभदा जी की कलम सज गया
सचमुच मैं वारी रे वारी।

अठारवीं सदी में लाए।
यूरोप में हमें कद्र दाँ !
नेपाली भी रही कहाती।
कांछा लेकिन मिला कहीं ना

तलछट मादा के जैतून।
आकार भी भारी लगता।
देखो मैं - बारात जा रहा,
पर दुल्हा भी क्या है फबताँ

पूंछ - पंख में झबरीलापन।
मानो वृक्ष सजा हो छितवन
आँखों की अरूणाई मादक
जैसे नीलम राधा आई

***

नीलपंख तोता

दक्षिण भारत में मैं रहता।
पश्चिम घाटों में सुख भरता।
नीली पूँछ में काला धब्बा
लाल चोंच में मस्त चहकता

भारत का मैं सुंदर हूँ खग
पक्षी - लोक का बेहतरीन नग
इसीलिए सब तरसे मुझको
लोग कहें ऐम्बैस्डर हूँ जग



आकाश में उड़ता जाऊँ।
रंग के कारण दिख ना पाऊँ
आँख मेरी है-बड़ मटकीली।
पके-पके फल रोज मैं खाऊँ।

तुमको भी अनार है खाना।
यदि तुम्हें है खून बढ़ाना।
पिज्जा, बर्गर, औ चाऊँमीन,
खा कर क्या कोविड बुलवाना।

मुझे है भाता तामिलनाडु।
जहाँ है होता पैदा काजू।
केरल वाले केला लाली,
लवर भेजता - मेरा राजू।

माताऐं रंगोली साजें।
बालों में गुलबार उतारें।
पीतल के लंबे दीपक में,
साँझ समय सूरज उतराएँ।

* * *

अपापने

अपापने सद्भावने, सुंदर स्वप्न।
मंगल - दर्शन... मधुर स्वपक्ष।
फूलों में छिप के रहती घने,
हे कामनी! हे चिर - रंजने !!

हवाई - द्वीप है, मेरा आश्रय।
नये देश का नया सुराश्रम

कामदेव की पत्नी रती ने
मुझे सवारा माँगा... शची ने

धीमे से बोलूँ, कोई सुन जा
मेरे दुख को... जामा दे जाना

मेरे द्वीप जभी तुम चलना।
तरह - तरह के पक्षी लखना

मेरे जैसे हैं बहुतेरे।
गुणी बहुत औ गुण हैं लुटेरे,

बच्चों की ज्यों गुड़िया रानी
त्यों मैं भी... देशी - कहानी



* * *

आग - पूँछ

मैं पक्षी भूटान औ सिक्किम में पाई जाती हूँ।
अरुणाचल के नदियों में, नित ही नहान करती हूँ।

आग-पूँछ के नाम से मैं, जग में जानी जाती हूँ।
सुंदरता की मानक हूँ मैं - यह खिदमत पाती हूँ।

आँख चोंच मिल कर दोनों इक दीर्घाक्षी बन जाती
जो देखे मोहित हो जाए, सोनाक्षी कहलाती।

अरूणाचल जा बौद्ध - धर्म को मैंने है अपनाया।
मुझे तथागत ने अपना है - पंचशील पढ़वाया।

ध्यान लगाऊँ, मन को चेतू,, पद्मासन में बैठूँ।
मंत्र नित्य जप रही निरंतर कभी नहीं मैं ऐठूँ।

सिक्किम में मठ, स्तूपों पर ध्वजा, सदा लहराऊँ।
बुद्ध तुम्हारे चरणों में नित, बार-बार सिर नाऊँ।

करूणा है उपदेश हमारा, जीवों को मत मारो।
क्षमा करो-दीनों को ईश्वर... हो उदार तो तारो।

❊ ❊ ❊



नवरंग

नवरंग तो खूब हैं मेरे।
लाल, हरे, बैंगनी घनेरे।

सुबह - शाम मीठा बोलूँ।
कड़वे बोल कभी न बोलूँ

मलिहारिन रूप मनोहर।
चूड़ी, बिंदी - बेंचे हर घर

औरत के मजमा में जाऊँ
कोमल हाथों में पहनाऊँ।

पीली, हरा, नील, सरसोंई।
पहनो अपनी रोज कलाई।

इसे पहन तू पिया रिझाओ
खन-खन कर मन को तरसाओ

फिरोजाबादी बिंदी रातें।
शहर चूड़ियों का कहलाते।

बिंदी में घूघट सजता है
नयनों में दिल भी हँसता है

अलता, लो, ले लो पायलिया
बोले - पायल ता थी धिया।

इतने में माली सर आए
हमको फिर - फिर उड़ाए।

हमको क्या, दूजे घर जाए
अपना माल बेंच कर लाए।



***

दूधराज

मैं अद्भुत हूँ, मैं विचित्र हूँ।
अजब-गजब हूँ,, औ सचित्र हूँ।
लंबी, सुंदर पूँछ हमारी।
जैसे चोटी में फुलवारी।

शुभ्र - वदन चंचल सुखकारी।
पर मैं हूँ... अति ही सुखकारी।
मध्य - प्रदेश की राज्य संपदा।
पक्षी में तिथि प्रतिपदा।



जंगल में है राज हमारा।
शेर, सिंह को भी ललकारा।
हाथी जी की करूँ सवारी।
गद्दा जैसी पीठ तुम्हारी।

घोड़ा की ताकत तो देखो।
सूरज से रथ कहे समेटो।
गैंडा जी को नहीं है काम।
खाऐ, सोऐ, घूमें गाम।

हिरना की अति सुभग शरीरा
देखत ही मन भया अधीरा।
भालू जी को मदारी पकड़ा।
यही बड़ा जीवों पर लफड़ा।

लोमड़ी बनती चतुर सयानी।
कुत्ते की कहलाती नानी।
गीदड़, लोमड़ी औ नीलगाय।
सभी डरें एक - दूजे भाय।

खरगोश का क्या है कहना।
संकोची, भयभीत ही रहना।
एक - दूजे का करें आहार।
यही पशुवत है व्यवहार।

जब ये आपस में भिड़ जाए।
हम तब वैदिक वचन सुनाए।
शांत रहो, फाँदों मत रगड़ा।
रहो परस्पर मिल कर तगड़ा।

जंगल का मतलब है प्यार।
जय बोलो भारत सरकार।

***

पीला तोता



ब्राजील का पीला तोता, खोज रहा था - भोज का न्यौता।
बढ़ने लगी निराशा जब ही, क्यों ना भारत चलूँ ये सोचा।
बड़ी खुशी से की तैयारी, भरने लगा कपड़ औ मेक अप।
चलूँ वहीं, कुछ पुण्य कमाऊँ, दिन भोजन फ्री कोई ना टोटा।

जल्दी एअरपोर्ट था आया, काफी भी तत्काल मँगाया।
टाई, बूट, चाल थी - बाँकी, टी वी में था, मन भरमाया,
हैलो - हाय कर रहा भारी, मानों यात्रा का हमसाया।
तब तक हुआ ऐनाउंस जोर- यात्री चलें, चार की ओर।
बार - बार था कंघी करता, कभी नहीं उसका मन भरता।

टिकट दिखाया, प्रश्न था पूछा - दिखलाओ आधार भी तोता।
वह तो हुआ बहुत भौच्चका, अब ये विपदा, क्या है होता?
घर जाना मजबूरी आई, ये किसने बद्दुआ कराई।
लौटो बुद्धु घर को जाओ, ब्रेक फास्ट भी खूब बनाओ।

ट्राली लेकर गेट पे आया, तब तक दूजा तोता पाया।
एक - दूजे से नैन मिलाया, फिर दोनों ने कुछ शरमाया।

वह भारत का हरा था तोता, जो कह दो, वो ही था रटता।
कहो डार्लिंग हो कैसी? पीली बोली क्या फरमाया?

हरा देख मन हरा हो गया, दौर यहाँ कि भोज तक चला।
परिचय, और विपत्ति सम थी, उसका बीसा नहीं था मिला।
दोनों के ही लक्ष्य था भारत, हरिला तोता हुआ कृतारथ,
कागज चेकिंग की परेशानी, कैसे करें काम ये भला।

अभी पीली थी सोच-निमग्ना, क्या होगा अब मेरा सजना ?
तब तक हरिया ने फरमाया, दोनों के ही एक हैं सपना।
एयर-लाइंस में नाटक सौ हैं, हमें मिले पंखों की बाजी।
दोनों ने था - तनिक विचारा... आए भारत पूर्ण कल्पना।

***

बत्तख का बच्चा

बत्तख के बच्चे ने सोचा।
माता - दिवस मनाएँ।

सारा जग ही पूज रहा है।
हम पीछे रह जाएँ?
जन्म दिया धरती पर माँ ने
है उपकार बड़ेरा।



बारिश, धूप, गर्मी आँधी से।
दूर ही किया बखेड़ा।

जल की निर्मल धारा में
मुझको जीना सिखलाया

डूबूँ... तैरूँ,, नाव बनूँ - मैं।
खेलूँ औ इतराऊँ।

जब मैं शिशु था, रक्षक तू
मैं कुछ अबूझ बतियाऊँ।

तू कहती - राजा बेटा !
आ सोना मुकुट सजाऊँ

नंदन - बन में, फूलों पर आ
झूला तुझे झुलाऊँ

नजर लगे ना आज डिठौनी
माथा तेरे लगाऊँ।

माँ-क्या सारे बच्चे ही यूँ
होते माँ को प्यारे

तुम देवी हो, तुम सर्वोपरि
पूजूँ चरण तुम्हारे

* * *

सतरंगी तोता

अमरीका का मैं सतरंगी तोता हूँ
सबसे सुंदर मनमोहक, मैं होता हूँ

अमरिका में नहीं प्रदूषण है भाई
इसीलिए भाती है, मुझको तन्हाई



लाल, हरा, बैंगनी, रंग किस्सा हूँ।
रंगों के सतमेल, नया हिस्सा हूँ।

जोड़ी में रहना- जीना, भाता है।
पिंजरा भाता नहीं बड़ा सताता है

पत्तों पर बैठूँ, फलों को खाता हूँ
मीठी बोली में सदा मैं गाता हूँ

भाषा मेरी प्यार, सभी पर वारूँ जी
करो ना क्रोध, न पियो दारू जी

पानी - दाना रखते जाना, ओ साथी
संख्या बढ़ जाऐ, यही मैं फरमाती

* * *

इंद्रधनुषी तोता

मैं तोता आस्ट्रेलिया का
सप्तरंग सत बेलिया का।

इंद्रधनुष हे नाम मेरा।
करता अद्भुत काम तेरा।

शीशा - कंघी नहीं कहीं।
शौकमिजाजी जरा नहीं।



पर प्रकृति ने रचा सलोना।
माँ ने लगाया नहीं - ढिठौना।

फिर भी नजर नहीं लगती।
उड़ता हूँ मैं बेफिक्री।

इंद्र - नगर की वासी हूँ।
ना अप्सरा न दासी हूँ।

द्रौपदी मुझको प्यार करे।
मेरा सब संसार भरे।

जब वो करती थी शृगांर।
घायल - पुष्प, लता परिवार।

आँखों में मर्दानी थी
मीन - नयन... मस्तानी थी।

चितवन इंद्री - फुलवारी
थी सुगंध से मतवारी।

प्रेम छलकता नैनों से।
नहीं बोलती बैनों से।

काजल ललचाए शतबार।
हिरणी देखी हुई बीमार।

माथा अर्धनदी का छोर।
मध्य विराजित सूर्य चकोर।

होठ पान पत्ते - सुकुमार।
उपर - नीचे हम करें विचार।

नाक बने थे रोशनदान।
सुंदर व्योम बिछाए वितान।

केश-राशि का क्या कहना।
कभी प्रलय, जीवन - गहना।

खुले मदन - मोहन धनश्याम।
और बाँध के पीपल- आराम।

जूड़ा में बँधते थे - नैन।
भौरें भी रहते बेचैन।

चित्रकार घबराता था।
छवि भी नहीं बनाता था।

आँखों के जब कोर दिखे।
शोला - शबनम रूके - रूके।

बोली तो मधुशाला थी।
पंचाली वह बाला थी ।

अर्जुन की थी प्राण - प्रिया।
दोनों का था - एक हिया।

जब वह अकेली होती थी।
खिड़की पर मैं होती थी।

मुझसे देती थी संदेश।
कहो प्रिये से जो परदेश।

कब आएँगे - बोलो तो।
इंद्रा - तोता... कहो- कहो।

तब तक पार्थ कहे - शर फेंक
मुझे लगा, शर एक विशेष।

❊ ❊ ❊

नीला - पीला तोता

आओ पढ़ो रंग - विज्ञान।
रंग बताते हैं पहचान।

जब दुनिया भी सभ्य नहीं
भाषा भी थी रम्य नहीं

केवल प्रकृतिवान धरती।
जंगल, नद, पर्वत, परती।



जहाँ-तहाँ कुछ लोग दुखी।
पशुओं जैसी चाल दिखी।

छीन झपट कर थे खाते।
मांस ! मंदिर से अघाते।

जीव नोंचता, जीवों को।
दुर्बल छिपते - झाओं को।

एक - दूसरे पर हॉबी।
करते - रहते बर्बादी।

खाना, सोना, भोग, दशा।
जीवन इतने में सिमटा।

जनसंख्या पर था संकट।
समय आ गया बहुत विकट।

हिंसा पर करूणा भारी।
प्रेम ने ली जिम्मेदारी।

बोल नहीं सब थे पाते।
फूल - पात को दिखलाते।

आओ, हाथ हिला कहते।
सहमे - सहमे सब रहते।

भूख लगी - दिखलाते माँस।
गर्दन हिला, कहें आ पास।

दर्द कहीं तो थे रोते।
आँसू पोंछ नहीं कहते।

शैन-भाष कुछ कमी खली।
रंगों की खिल गई कली।

लाल-प्यार / खुशियों का था।
हरा का मतलब रेडी था।

पीला मतलब शुभ आचार।
लड़ो-भिड़ो मत मारो यार।

पीला फूल लिए सब डोले।
अहिंसा का बस्ता खोलें।

देखो !! पेड़ों पर फल चार।
ऐसे ही लग जाए हजार।

पत्थर - कृषि औजार बने।
माटी पर हलचल सुधरे।

तब तक दिखा - कोई आकाश।
लगा बुलाने आओ पास।

दूजा हाथ - हिला बोला।
वो नहीं आऐगा पगला।

तब तक मेरा रूप दिखा।
जीवों का मन खूब खिला।

अरे ! आ गयी नील परी।
ये सबमें है बहुत खरी।

मैं बोली - सुधरा जीवन।
और सुधारो हे भगवन।

❊❊❊

नवरंग फाख्ता

पक्षी जब नवरंग न हो।
कोई कायदा, ढंग न हो।

तब तक है बेकार चलन।
जीवन में कोई जंग न हो।

क्या है छटा छोर पाई।
जयपुर चुनरी लहराई।



आसमानी से है गुलबंद।
माथे खिले रानिया रंग।

पंख हरे या धानी हैं।
मिस वर्ड रिकार्ड बनानी है।

कभी नहीं मैं फँसती जाल।
मुझे नहीं कोई जंजाल।

पश्चिम आस्टेलिया मेरा घर।
रहती हूँ मैं सदा निडर।

वहाँ न होते चिड़ीमार।
करते हैं, पक्षी से प्यार।

इधर - उधर मैं हूँ जाती।
खुशियाँ सबको दे जाती।

* * *

गौल्डियन फिंच

पश्चिम आस्टेलिया वास मेरा।
सागर - बीच आवास मेरा।

सोच रही जाऊँ जापान।
सीखू वहाँ बुद्ध का ज्ञान।

कुछ - कुछ भारती तोता हूँ।।
कभी नहीं में रोता हूँ

नहीं कोरोना का है डर।
क्यूँ भटकूँ मैं इधर-उधर।



सागर गोता - खोर हूँ मैं।
रंगभरी इक भोर हूँ मैं।

लालमुखी हनुमान हूँ।
रामायण की जान हूँ।

बैंगनी बैंगनवादी हूँ।
सब्जी समाजवादी हूँ।

हरियाला भी पंख मेरा।
भारत - तोता मित्र मेरा।

नीला चटक - मटक धानी।
क्या लाऊँ दिलवर जानी ?

मुझे भीड़ से है परहेज।
यही है मेरा दस्तावेज।

* * *

लव बर्ड

लव कहने पर जाने कैसी
खुशी नसों में आती।
चाहे उत्तर कैसे भी हों
प्रश्न। उछालें लाती।

इसकी बड़ी जरूरत सबको,
ये सबको है ठगती।
पर मथुरा के पेडा जैसे।
सबको है पँछताती।



प्यार कल्पना, प्यार अल्पना
प्यार जरूरी जीवन।
इसकी मिलन - रेख ना कोई
ये उधेड़ का सीवन।

अपने इजहारों के खातिर
कितने सितम किए हैं ?
चोरी हुआ गुलाब अचानक।
खत के दौर चले हैं।

छिप कर मिलना, झूठ, तमाशा
नाटक बहुत किऐ हैं?
सौ द्वारों के भीतर आखिर
कब तक होठ सिए हैं।

अपना प्यार बढ़ाने खातिर
मुझे खरीदी करते।
वन में सदा विचारते थे हम,
बंद मँहु हैं रखते?

लकड़ी का इक घर बनवा कर
घुसा दिए हैं हमको।
टूटे हुए घड़ा, कटोरी,
सब ठूँसे हैं हमको।

सुंदर कहते, अच्छा कहते,
लव के करते टोटके।
पर मेरा तो खून खौलता...
लगे, उठा के पटकें।

हम जब बोले-गुस्से में तो
कहें, बहुत तरूणाई।
मुझे बाँध कर रखने वालों
तेरी शामत आई।

बंद करो फिर आ-आ झाँको,
मेरा प्यार फलेगा?
शाप लगेगा, तुमको मेरा...
तू न कभी पनपेगा ?

कुछ स्वतंत्रता मेरी भी है,
हम भी प्रणय निवेदन।
बंद कर दिया कैदी जैसा।
यह कैसा प्रतिवेदन।

एक-एक कर हम मरते हैं,
तेरा प्लान अजूबा।
कल बाजार से, दूजा लेंगे
मानो हम तरबूजा।

अरे! स्वार्थ के पुतलों सुन लो,
ऐसा शाप लगेगा।
काल-कोठरी में रह कर क्या,
मेरा वंश चलेगा?

हम प्रकृति के परम पुजारी,
डाल-डाल पर कूँदें।
बल्ब लगा कर लकड़ी-घर में,
पैदा किऐ फँफूदें।

मुझे आजादी देकर ही,
तेरी तकदीर फलेगी।
प्रेम-बंद्ध में बनी हुई है,
मेरी प्रीत खलेगी।

***

तिपाखी - तोता

बड़े शहर में जाकर देखा,
एक विचित्र तमाशा।
जिसको देखो, वो रोता है-
फैली घोर निराशा।।

हरे रंग का टीचर बोला -
समय बुरा है भैया।
मानवता की पूछ नहीं है,
सबसे बड़ा रुपैया।।



पीला वाला बोल उठा था,
जीयो अपने बल पर।
कभी किसी की आशा करना,
कौन जिया है कल पर।।

लाल बोलता रहा खुशी से,
जय हो - कृष्ण जन्म को।
पहरेदार सभी थे सोए,
बालक चला, महल को।।

जैसी नीयत होती वैसा ही,
फल मिलता है - बेटा।
ठूँस रहे हैं - बड़ - बूढ़ो को,
वृद्धाश्रम में चहेटा।।

जिसने तुम पर,, सभी लुटा कर,
बोला - मीठे बैना !
उनको घर में रहने का...
अधिकार तनिक भी है ना।।

जहाँ नहीं सम्मान बड़ों का,
और नहीं मर्यादा।
ध्वस्त वहाँ के संस्कार हैं,
बच ना सकें जियादा।।

* * *

पूर्बिया नील पक्षी

हम सब पक्षी जिएँ कैसे ?
अपना लुगड़ा सीएँ कैसे

जंगल कटा, बाग भी उजड़ा
खेतों पर बेजोड़ है पहरा

सूखे - ताल, सरोवर सूखे।
कुएँ नहीं, नहर भी रूखे।

अनाजों में लगा है ताला।
कोई नहीं फटकने वाला।



जो कुछ तो खुद्दी मिल जाए
हम भी बैठ, रसोई खाए।

मेडों पर काँटें झाड़ी है।
कंकर-पत्थर... भी भारी है।

मक्का की खेती है भाती।
दाना कुतर-कुतर कर खाती।

पर अब बीच में बना मचान।
रखवाली में लग्गू जवान।

मोबाइल लेकर हैं सोते।
वीडियो देख बहुत खुश होते।

रसिया, बलमा सुने हजार।
कभी नहीं राधे - सरकार

खाँसी देकर हमें डराएँ।
टार्च मार कर, कह रहे आएँ।

हम सब में - नीतुल बरजोर।
बिना बात करता था शोर।

उनको करे बहुत परेशान।
आफत में थी, उनकी जान।

एक बिजूखा का भी पहरा।
उस पर भी नीतुल था गहरा।

सब को लेकर मिटिंग बनाया
ये भी एक तमाशा भाया।

ये कपड़े का पुतला है।
सिला हुआ ये सुतला है।

उपर हाँड़ी रखी है।
वो भी फूटी - कच्ची है।

एक मिलो - धावा बोलो।
पोल - पट्टी इनकी खोलो

आंदोलन ने पकड़ा तेजी।
कुर्ता फटा... रूको मत लेजी

त्राही - त्राहि हो गया बवाल।
हुआ बुरा मालिक का हाल।

एक बुजुर्ग नील था आया।
सबको बहुत देर समझाया।

हम पक्षी मानव से अच्छे।
मन से भोले-भाले सच्चे।

बंद करो आंदोलन भाई।
वो अनाज की ट्राली आई।

***

काली टोपीवली चिकाड़ी

छोटी चिड़िया बड़ी घरेलू।
आती - जाती है सहमेलू।

पंख खुले छतरी के जैसे।
नाचे, गाए, फीस न पैसे।

एक दिन उसके मन में आया।
पंचसितारा जाऐं यारा।

दोस्त बहुत सुन कर शरमाया
हमको जंगल ही मन भाया।



अपनी दुनिया यहाँ निराली।
होटल की है दुनिया काली।

अच्छा मैं समझी सब जानी।
नहीं जाने की है अब ठानी।

चलो, मैंने भी अब जिद छोड़ी।
क्या करना, तेरी मजबूरी।

नहीं - नहीं ऐसा मत सोचो।
मेरी दोस्ती को मत कोसो।

दोनों पहुँचे पंचसितारा।
आकर्षक था, बहुत नजारा।

चिचाड़ी को खुशी अपार।
चारो ओर अलग संसार।

बिजली चकाचौंध है छाई।
चमत्कार से दृश्य है भाई।

मेम साहब का आना - जाना।
माँगे फरमाइश का खाना।

कपड़े भाँति-भाँति के पहने।
चकाचौंध से उनके गहने।

माई डियर! बोल रही हैं।
पर्स निरंतर खोल रही है।

लिपस्टिक से मन नहीं भरता।
ऊँची सेंडिल, झिलमिल कुर्ता

अमरिका का मसाचुसेट राज।
हम नागरिक वहाँ बेताज।

यही सोच कर धौंस जमाया।
इतने में वेटर भी आया।

सूची देकर हो गया दूर।
चिड्डा बोला - कहो हुजूर।

मैं मुस्काई - चलो मँगाओ।
जो खाना है... वो फरमाओ।

डालर कितना तुम लाए हो।
उतना ही खाने पाए हो।

दाम पढ़े तो उखड़े होश।
निकल गया जो दिल में जोश।

जितने का सामान नहीं है।
उससे ज्यादा दाम सही है।

स्टार्टर, फिर सूप मँगाओ।
हाँफ प्लेट को चार बनाओ।

रोटी के है- विविध प्रकार।
दाल फ्राय या हो बिन फ्राय।

सब्जी जो माँगो सो पाओ।
पापड़, चटनी बटर भी खाओ।

छूरा काँटा - क्यों है आया?
क्यों यह मालिक ने भिजवाया

इससे खाते - दिलवर जानी।
हँसी चिरैया, दे दो पानी।

बड़े - बड़े नाटक हैं भाई।
इससे भला थिएटर भाई।

किसी तरह से खाना खाया।
हँसते-हँसते दम भर आया।

तब तक एक कटोरी में जल।
नींबू के टुकड़े संग लाया।

चिड्डा पी गया, गट्टम - गट्ट।
चिड़ी हँसी-जय भोजन भट्ट।

***

यूरोपियन सुनहरी फिंच

मैं यूरोप की - रानी चिड़िया।
गोल्डपिंच है नाम... सुंदरिया।

कभी विश्व में राज था मेरा।
डूबा नहीं ... सूर्य का डेरा।

बोल रही थी, मेरी तूती।
एक हुकूमत... रही अछूती।

मैं पक्षी हूँ... मेरा क्या है।
आजादी मेरा नाता है।



भारत पर जब जुल्म था ढाया
जान लिया अब अंत है आया

क्यों कि वह संतों का देश।
देते नहीं कभी भी क्लेश।

मेरे गरूण देव की धरती।
मैं जिनकी पूजा हूँ करती।

हम मानव के बड़े करीबी।
रहे देखते - हम खग-जीवी।

बड़े वीर, योद्धा, और प्रहरी।
आंदोलन के सतत सुलहरी।

अंडमान का मान बढ़ाया।
सेलुलर क्रांति कहलाया।

याद आ रहे खुदीराम हैं।
सावरकर के बड़े नाम हैं

काला पानी कह कर भेजा।
अमर - भूमि कह उसे सहेजा

मैंने सारे दिन वो देखे।
लहू घूँट के रह गए पीते।

भारत विश्व-गुरू का मान।
पक्षी भी हैं - गुरू समान।

हम सब की भी गुरू भूमि है।
नित्य करें... मन से स्तुति है।

❊ ❊ ❊

अमेरिकन गोल्डफींच

बहुत सुखी हूँ अमरीका में, जाकर कहना भैया।
लोग यहाँ विकसित जरूर हैं, माने गिने रूपैया।

पर जीवों को जीव समझ कर करते प्राण निछावर।
पिंजड़े का व्यापार नहीं है, रहें मुक्त गगनाचर।

बंद करें, फिर हुज्जत करते, दाना ठूँसे मुँह में।
रूखी-सूखी खाकर भाता जीना हमें समूह में।



पानी रखते, दाना देते, रखते ध्यान हमारा।
हमको ऐसा लगता जैसे, बड़ सम्मान दुलारा।

ठंड़ी सर्द रात में मुझको, गर्म पानी भी देते।
पर बदले में हम से कुछ भी नहीं वो लेते।

पीली-पीली सुंदर शक्ल देख कर, बच्चे हैं दीवाने।
बड़ों को भी मैं प्यारी लगती ज्यों शमा-परवाने।

छप-छप नहा के आती जब मैं, ब्रेक फास्ट है मिलता।
जो भाता मैं खा लेता हूँ, प्यार से दिल है खिलता।

नहीं कोई आखेटक मेरा, न चाइना सा व्यवहार।
भूज, सेंक कर सब खा लेते, इतना तुच्छ विचार।

काँच की दीवारें, ना घायल कर दें मुझको।
इसीलिए है, बिजली जलती-भीतर भवन के सोचो।

नहीं आर्गन का धंधा है, ना किडनी की चोरी।
कोई हममें गैंग नहीं है, जो करता है बरजोरी।

भारत माँ को मेरा भी साष्टांग दंडवत कहना।
मना आजकल हाथ मिलाना, हाय-बाय अब कहना।

हम आऐंगे, झटिंगा में है पक्षी सम्मेलन।
आत्महनन पर होगा मेरा ही विशेष संभाषण।

मेरी जैसी प्रजातियों की वहाँ भी है - संरक्षण।
एयर टिकट कटाओ भैया, लेडिज में रिजर्वेशन।

❊ ❊ ❊

अंतिलोफिया बोकेरमणी

चिड़ियों का प्यारा संसार।
है प्रकृति पर परम उदार।

भोर भये उठ जाती है।
मीठे सुर में गाती है।

सबको रोज जगाती है।
उठो, पढ़ो समझाती है।

सूर्य-प्रणाम करे नित ही।
देती भक्ति में चित ही।



रोज फुदकती इधर-उधर।
कभी बाग तो कभी डगर।

दाना चुगती, खेल हजार।
घृणा, द्वेष औ नहीं लबार।

किसी दवा से काम नहीं।
रोग नहीं, कोहराम नहीं।

नहीं विटामिन है लेती।
डाक्टर से भी ना मिलती।

खून - टेस्ट नहीं होता है।
हिमोग्लोब न रोता है।

न सिर ना ही पाँव दुखे।
नहीं डरी, ना कभी झुके।

पाठशाला ना कभी गई।
पर तरकीबें नई - नई।

अल्प बजट पर है जीना।
छप्पन इंची है सीना।

डब्लू एच ओ काम नहीं।
पल भर भी आराम नहीं।

हरि भरोसे हूँ रहती।
सुख-दुख जो दे हूँ सहती।

वह सबका है प्रतिपालक।
हम सब हैं उसके बालक।

***

चाँदी तीतर

मेरी फोटा मत लेना तुम।
मुझे नजर लग जाएगी।
इस कौरोना के आफत में
आफत भी शरमाएगी।

मेरी माँ लेती थी बलैया।
नजरौटा भी देती थी।
दुआ माँगती थी, रहमत से
दान बहुत कुछ देती थी।



यूँ ही ना मैं बड़ी हुई हूँ।
सुंदर, प्यारी, नाजुक हूँ
चीन दक्षिणी की रहवासी
दिल से बिलकुल भावुक हूँ

श्वेत लहरिया वाले पंखों।
से प्रकृति ने सँवराया।
बहुत मधुर है - मातृभाषा,
मीठे सुर में है गाया।

शाही चालो में मैं चलती।
मुँह पर लाल रूचि फाँहें
पीछे के पँखों की शोभा।
जैसे बर्फीली बाँहें।

बाँस झाड़ियों में हूँ रहती।
छिपती हूँ, पर डरूँ नहीं।
मन में लाखों बात हैं छिपी
कभी किसी से कहूँ नहीं।

सेल्फी लेना आता मुझको।
खूब पोज भी देती हूँ।
कुछ शरमा कर, आँखों से मैं
लव यू भी कह देती हूँ।

पर मेरी प्रजाति को खतरा।
मुझे बचाओ, मोदी जी
एक बार सिद्धार्थ बनो तुम
मुझे उठाओ - गोदी जी।

जीव न होंगे, तो दुनिया में।
कैसे रौनक आऐगी।
सबके मिलने से ही तो,
सृष्टि सजने पाऐगी।

लोग न जाने क्यों आखिर।
पक्षी पर घात लगाते हैं।
कहीं मोर - संरक्षण खंडित,
हम भी तो, बिक जाते हैं।

हम तो मन ही मन में अपने
सबकी कुशल मनाते हैं।
प्रेम सभी से करने वाले,
के दुर्दिन भी आते हैं।

पर्यावरण-पारिस्थितिकी की,
हम हैं माला एक बेजोड़,
हूँ विज्ञान-प्रमाणित भी तो,
यारों पक्की बात हँसोड़।

❊ ❊ ❊

विक्टोरिया मुकुटधारी कबूतर

मैं परियों की परम सखी हूँ।
संग रहूँ दिन - रैन।
मेरी। नीली पंखों पर वे,
रहें फिदा ... बेचैन !

सुंदर रूप सलोना उनका,
छवि है, जादू वाली।
रंग - बिरंगें सज्जाओं से,
अनुपम लगें निराली।



काया है मनमोहक ... आँखें,
बड़ी मस्त-कजरारी।
केशों के मेघों पर बैठे,
मोरपँख बदरारी।

फूल टँकें हैं ... परिधानों में,
कपड़े झिलमिल वाले,
बादल में ज्यों चाँद छिपा है,
लगे रूप पर ताले।

मुझे साथ लेकर वो रहती,
सुंदर हुई नवीना।
जैसे माँ वीणापाणि के,
साथ मयूर छबीला।

उसके सिर पर मुकुट सलोना
रेशम - सा चमकीला।
मेरा विक्टोरिया के जैसा,
मुकुट मस्त झबरीला।

धानी रंगी पँखों में वह,
कसी - कसी तरूणाई।
और नीलिमा चादर ओढ़े,
मैं सुरमई रूबाई।

उसकी चितवन में है जादू,
कामरूप भू - भागी।
मेरी चितवन की मत पूछो,
कभी बर्फ कभी आगी।

लम्बे पतले हाथ लचीले,
गलबाही लतनारी।
और लताओं जैसी नाजुक मैं,
सुमनी सुकुमारी।

उसके पैरों में, बेला के,
घुघुँर गंधमयी हैं।
और हमें भी तो पायल के,
बोली रूनुझुनू हैं।

होठों पर सुषमा, गुलबहिया,
पान कोर की बातें।
और हमारी छुईमुई सी हुई,
झुकी आँख सी रातें।

भौंहों पर कमनीय लिपि की,
प्रेम - पत्र लजरीले।
और मेरी भंगिमा शिल्प के,
नक्काशी अजरीले।

संगमरमरी रंग, चाँदनी उतरी,
यहाँ नहाने।
और मेरे गदरीले रूपों पर,
गंगा इतराने।

वो उड़ती जब मुझको लेकर,
दोनों हवा-महल में।
देखें इस संसार में कितने,
दुख की भरी गजल में।

हम उनकी आँखों के आँसू,
पोछ... हँसाने आते।
मैं तेरी हूँ .... यकीं मुझे कर,
यही फसाने गाते।

मुझे चाहने वालों ... तुमको,
इतना प्यार मिलेगा।
मेरी बेस्वार्थ की चाहत से,
तोहफा गुलशनी खिलेगा।

* * *

प्रवासी मुर्गाबी

एक बार ये मन में आया।
कोई नहीं है मेरा भाया।
जीवन मेरा बहुत अकेला।
तन्हाई का लगा है मेला।

माँ बचपन से, छूट गई है।
जीवन में संघर्ष कई हैं।
कोई दाना दे तो खाते।
पक्षी-दल भी बहुत सताते।



छोटा था, भयभीत ही रहता।
दूजे जैसा नहीं चहकता।
इक निरीह सा देखा करता।
सबको माँ संग रहा निरखता।

सब मुँह में दाना थे पाते।
माँ की खातिर आस लगाते।
मैं डाली पर रहूँ सोचता।
किस्मत को ही रहूँ कोसता।

धीरे-धीरे हुआ बड़ा मैं।
अपने पैरों रहा खड़ा मैं
सब पक्षी उड़ने में डरते।
केवल थोड़ी देर फुदकते।

मैं लेता लंबी उड़ाने।
दूर-दूर तक थे अफसाने।
मेरे संगी - साथी ... अपने।
बुनते रहे नित्य ही सपने।

मैं सपने साकार था करता।
मुझमें आत्म - विश्वास था जागा
मैं रोटी को नहीं तरसता।
बहुत चतुर था, बड़ी सरलता।

पक्षी में जब होता झगड़ा।
मैं मिटवाता, उनका रगड़ा।
पर जब माँ की याद सताती।
मुझे ही आकर वो समझाती।

आत्मबली बन जग को जीतो।
पुरुषार्थ बिन जग है फीको।

***

निकोबारी कबूतर

मैं भारत के द्वीप - समुद्री का हूँ पहरेदार।
मैं ज्यादा चतुर - सयाना, ना पढ़ता अखबार।
बंगाल की खाड़ी में-द्वीप - समूह घनेरे।
सुंदर एक से एक बड़े हैं... वन भी छटा बिखेरे।

अंडमान हम दोनों मिल कर, करते राज्य स्थापन।
हमने आजादी के युग में, दिखा दिया अनुशासन।
देश-प्रेमियों का तीरथ ये, है युग पंथ-प्रदर्शक।
सेलुलर की दीवारों पर - रोज झुकाते मस्तक।



मतलब निकोबार का होता, नग्न भूमि के वंशज।
आदिवासी कहलाए हम... सदा प्रकृति के सहचर।

लोकप्रिय यह क्षेत्र हमारा, जो हनुमत - अभिलाषा।
निर्मल, शांत, कला-संरक्षक, मणि जैसा है उन्नत।

वनस्पति, मूँगा - भीति, आकर्षक - सागर-तट हैं।
जल - क्रीड़ा में रूचि रखने से, यहाँ तो वंशी-वट है।

आधुनिकतम सब सुविधाएँ, पर्यटन - यहाँ मुख्यालय।
मराठे, अंग्रेज, जपानी, सबका शासनालय।।

यहाँ उन्नीस सौ तिरालिस में, लहराया तिरंगा।
इसीलिए प्रति वर्ष तीस दिसम्बर... है-इनका मगनालय।

काला़पानी नाम कभी था, अत्याचारी-नगरी।
भारत की जय कार करें तो, धरें ब्रिटिश के प्रहरी।

सुनामी भी भोगा हमने, जनसंख्या की हानि।
सुनो - सुनो तुम बहुत गौर से मेरी करूण-कहानी।।

मैं इतना सुंदर हूँ मुझको, प्यार करें सब कोई।
नीले फाँहों वाले पंखों, पर लुट रहे बटोही।।

झबरीला स्कर्ट हमारा, रंग-बिरंगी बूटी।
रोंये - रेशम जैसे कोमल, लंबी, घनी है चोटी।।

एक बार तो आना, मेरे द्वीप मेरे दीवानों।
बहुत घुमाऊँगा... मैं तुमको आजादी-परवानों।।

❊❊❊